www.bharatsamvad.live

R.N.I.No- MAHHIN/2017/74173

सत्य का स्वर

भारत संवाद

मुंबई, प्रयागराज और लखनऊ से प्रकाशित

सोशल मीडिया पर भारत संवाद
https://x.com/BharatSamvad
www.facebook.com/bharatsamvad.in
www.youtube.com/@BharatSamvad-m3n
E-Paper bharatsamvad.live

मौसम
अधिकतम तापमान 30.c
27.c न्यूनतम तापमान

बाजार
सोना 98.755g
चांदी 107,000kg

2 अमेरिका से टैरिफ विवाद के बीच पीएम मोदी का स्वदेशी पर जोर

प्राइवेट बस और पिकअप की भिड़ंत 04

वर्ष :09 | अंक :44 | मुंबई , सोमवार 04 अगस्त 2025 | पृष्ठ : 06 | मूल्य : 2: 00 रुपए

संक्षिप्त समाचार

शिवकुमार ने रेवन्ना की उम्रकैद पर भाजपा-जद(एस) नेताओं की चुप्पी को लेकर सवाल उठाए

जिस मामले में प्रज्वल को सजा सुनाई गई वह 48 वर्षीय एक महिला से संबंधित है, जो हासन जिले के होलेनरसीपुरा स्थित परिवार के गन्निकाडा फार्महाउस में घरेलू सहायिका के रूप में काम करती थी। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने दुष्कर्म के एक मामले में जनता दल (सेक्युलर) के पूर्व सांसद प्रज्वल रेवन्ना को आजीवन कारावास की सजा सुनाए जाने के संबंध में जद (एस) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं की चुप्पी पर सवाल उठाया। विशेष अदालत ने जद (एस) के संरक्षक एच.डी. देवेगौड़ा के पोते रेवन्ना (34) को बलात्कार के एक मामले में शनिवार को उसके शेष जीवन के लिए कारावास की सजा सुनाई।नयी दिल्ली में शिवकुमार ने संवाददाताओं से कहा कि जद(एस) नेता और उनके गठबंधन सहयोगी भाजपा ही प्रज्वल रेवन्ना मुद्दे पर टिप्पणी करने में सक्षम हैं, और उन्होंने सवाल किया कि वे क्यों नहीं बोल रहे हैं।

साइबर ठगी का शिकार होने के बाद डीयू के छात्र ने की आत्महत्या

दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) के 19 वर्षीय छात्र ने मोबाइल फोन खरीदने की कोशिश करते समय ऑनलाइन धोखाधड़ी में 94,000 रुपये गंवाने के बाद यहां रोहिणी इलाके में कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। महेश राणा 14 जुलाई को उत्तरी दिल्ली स्थित अपने घर से लापता हो गया था। उसका शव 16 जुलाई को बेगमपुर जल शोधन संयंत्र के पास मिला। पुलिस के मुताबिक, राणा ने अपनी मां को संदेश भेजकर बताया था कि उसके साथ साइबर धोखाधड़ी हुई है और वह घर छोड़कर जा रहा है। इसके बाद उन्होंने पुलिस से संपर्क किया। राणा डीयू के स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग में बी.कॉम (ऑनर्स) द्वितीय वर्ष का छात्र था। उसने ठगों को कई बार में राशि अंतरित की थी लेकिन उसे मोबाइल फोन नहीं मिला। पुलिस को 16 जुलाई को उसका शव मिला और उसने फोटो सोशल मीडिया पर साझा किया, जिसके बाद 19 जुलाई को उसकी पहचान हो सकी। पुलिस ने बताया कि मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच की जा रही है।

गोंडा में बड़ा हादसा, बोलेरो बेकाबू होकर नहर में गिरी, 11 की मौत 04 घायल

गाड़ी में छटपटाते रहे, बाहर नहीं निकल पाए; एक परिवार के 9 लोग

बड़ा हादसा

हादसे की जानकारी मिलते ही स्थानीय ग्रामीणों और पुलिस ने तुरंत बचाव अभियान शुरू किया। गोंडा के विनीत जायसवाल ने बताया, 'बचाव दल ने 4 लोगों को, जिसमें 2 बच्चे और ड्राइवर शामिल हैं, सुरक्षित बाहर निकाल लिया है। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल भेज दिया गया है।' पुलिस ने नहर से 11 शव बरामद किए हैं, जिन्हें पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। शुरूआती जांच में हादसे की मुख्य वजह ओवरलोडिंग बताई जा रही है।

एजेंसी

सीएम योगी ने जताया दुख

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोंडा में हुये हादसे का संज्ञान लिया है। सीएम ने शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की है, उन्होंने इस हादसे पर दुख जताया है। इतना ही नहीं उन्होंने अधिकारियों को मौके पर पहुंच राहत एवं बचाव कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिये हैं।उन्होंने घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना की है। उन्होंने कहा है कि जनपद गोण्डा में दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना में हुई जनहानि अत्यंत दुःखद एवं हृदय विदारक है।मेरी संवेदनाएं शोक संतप्त परिवारों के साथ हैं। इस दुर्घटना में दिवंगत हुए लोगों के परिजनों को ?05-05 लाख की आर्थिक सहायता प्रदान करने तथा जिला प्रशासन के अधिकारियों को घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाकर उनके समुचित उपचार के निर्देश दिए हैं।प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोकाकुल परिजनों को यह अथाह दुःख सहन करने की शक्ति तथा घायलों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्रदान करें।

गोण्डा : उत्तर-प्रदेश में गोण्डा जिले के इटियाथोक थानाक्षेत्र के बेलवा बहुला गांव के पास रविवार सुबह सरयू नहर में श्रद्धालुओं से भरी एक जीप के अनियन्त्रित होकर पलट जाने से ग्यारह लोगों की मृत्यु हो गयी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दुर्घटना पर दुःख प्रकट करते हुये मृतकों के परिजनों के लिये पांच-पांच लाख की धनराशि का ऐलान किया और पीड़ित परिवारों की त्वरित सहायता के अधिकारियों को निर्देश दिये हैं । इस दुर्घटना के एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि सुबह से ही बारिश होने के कारण सड़क पर फिसलन थी। उन्होंने कहा, एसयूवी नहर के बगल में बनी सड़क पर जा रहा था उसी बीच चालक ने ब्रेक लगाया जिससे गाड़ी फिसल करके नहर में जा गिरी। तत्काल पुलिस को फोन करके गांव के लोगों को मौके पर बुलाया और रस्सी के सहारे एसयूवी को बाहर निकाला। पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल के अनुसार, रविवार की सुबह मोतीगंज थानाक्षेत्र के सीहागांव के

पीड़ितों के लिए पीएम मोदी का ऐलान, मृतकों के परिजनों मिलेगा 2 लाख मुआवजा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गोंडा हादसे में जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों के लिए आर्थिक सहायता की घोषणा की है। प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से प्रत्येक मृतक के परिवार को 2 लाख रुपये दिए जाएंगे। इसके साथ ही, इस दुर्घटना में घायल हुए लोगों को 50,000 रुपये की अनुग्रह राशि दी जाएगी।

रहने वाले प्रहलाद अपने परिजनों व अन्य संग खरगूपुर क्षेत्र में स्थित बाबा पृथ्वीनाथ मंदिर में जलाभिषेक करने जीप में सवार होकर जा रहे थे। रास्ते में इटियाथोक थानाक्षेत्र के बेलवा बहुला गांव के पास सरयू नहर में अचानक अनियन्त्रित होकर जीप पलट गयी। घटना में एक ही परिवार के नौ लोगों समेत ग्यारह श्रद्धालुओं की डूबने से मृत्यु हो गयी जबकि चार अन्य को बाहर निकलवाकर अस्पताल उपचार के लिये भेज दिया गया है।

श्रीनगर एयरपोर्ट पर 9 किलो अतिरिक्त सामान को लेकर बवाल, सैन्य अधिकारी ने कर्मचारियों को बेरहमी से पीटा

सैन्य अधिकारी और स्पाइसजेट के कर्मचारी पर मामला दर्ज

श्रीनगर एयरपोर्ट पर अतिरिक्त सामान को लेकर हुए विवाद में एक सैन्य अधिकारी ने स्पाइसजेट के कर्मचारियों पर जानलेवा हमला कर दिया। इस हमले में कर्मचारियों को गंभीर चोटें आईं और अधिकारी ने सुरक्षा नियमों का भी उल्लंघन किया, जिसके बाद केस दर्ज की गई है। स्पाइसजेट ने अधिकारी को 'नो-फ्लाई सूची' में डालने की प्रक्रिया शुरू कर दी है और सेना भी मामले की जांच कर रही है।

एजेंसी

श्रीनगर हवाई अड्डे पर एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है, जहां एक सैन्य अधिकारी पर स्पाइसजेट के चार कर्मचारियों पर जानलेवा हमला करने का आरोप है। इस हमले में कर्मचारियों को रीढ की हड्डी में फ्रैक्चर और अन्य गंभीर चोटें आई हैं। यह घटना अतिरिक्त सामान को लेकर हुए विवाद के बाद हुई।

क्या है पूरा मामला?

यह घटना 26 जुलाई, 2025 को श्रीनगर से दिल्ली जाने वाली उडान रऋ-386 के बोर्डिंग गेट पर हुई। विवाद की वजह जो सामने आई है, वो यह कि सैन्य अधिकारी दो हैंड बैगेज ले जा रहे थे, जिनका कुल वजन 16 किलो था, जबकि नियम के अनुसार केवल 7 किलो की अनुमति है। जब एयरलाइन कर्मचारियों ने उन्हें अतिरिक्त सामान के बारे में बताया और शुल्क भरने को कहा, तो वे भडक गए। अधिकारी ने न सिर्फ शुल्क देने से इनकार किया, बल्कि कर्मचारियों पर बार-बार घूंसे और लातें बरसाईं। एक कर्मचारी को इतनी बुरी तरह पीटा गया कि वह बेहोश होकर जमीन पर गिर गया, लेकिन अधिकारी उसे लगातार मारता रहा। एक अन्य कर्मचारी को भी जबडे पर लात लगी, जिससे उसकी नाक और मुंह से खून बहने लगा। इस दौरान एक कर्मचारी बेहोश हो गया, लेकिन उसे लगातार लात मारी गई. एक अन्य कर्मचारी को अपने सहयोगी की मदद करते समय हुए हमले में जबड़े की हड्डी टूटने सहित चेहरे पर गंभीर चोटें आईं. प्रवक्ता ने कहा, हवाई अड्डे पर चिकित्सा टीमों ने घायल कर्मचारियों को अस्पताल ले जाने से पहले प्राथमिक उपचार किया. एक कर्मचारी की रीढ़ की हड्डी में फ्रैक्चर होने की खबर है।

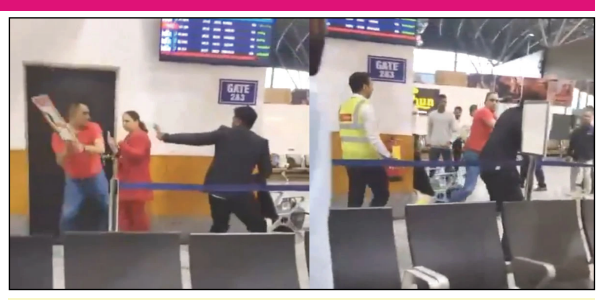

एयरलाइन ने आधिकारिक बयान में क्या कहा?

स्पाइसजेट के आधिकारिक बयान के अनुसार, बोर्डिंग गेट पर स्थिति जल्द ही हिंसक हो गई. एयरलाइन के एक प्रवक्ता ने कहा, यात्री ने हमारे कर्मचारियों पर घूंसों, लातों और यहां तक कि कतार में खड़े होने वाले स्टैंड को हथियार की तरह इस्तेमाल करके गंभीर हमला किया.

चुनाव आयोग को लेकर जनता में संदेह :कांग्रेस नेता

सरकार संसद में चर्चा से भाग रही; क्या ये चुनावों में गड़बड़ी को छिपाने की कोशिश

गोगोई ने ऑपरेशन सिंदूर पर कहा कि गृहमंत्री अमित शाह ने पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए लोगों के प्रति न तो संवेदना जताई और न ही खुफिया विफलता की जिम्मेदारी ली, जो उनके मंत्रालय के अधीन है।

एजेंसी

नई दिल्ली , लोकसभा में विपक्ष के उप नेता और कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने रविवार को चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि विपक्ष चाहता है कि मतदाता सूची में संशोधन को लेकर संसद में खुलकर चर्चा हो, लेकिन सरकार इसे टाल रही है। असम कांग्रेस की कार्यकारिणी बैठक से पहले मीडिया से गोगोई ने कहा कि आज जनता के मन में चुनाव आयोग की निष्पक्षता को लेकर संदेह है। सरकार इस पर चर्चा से क्यों भाग रही है? क्या यह बीते विधानसभा और लोकसभा चुनावों में की गई किसी गड़बड़ी को छिपाने की कोशिश है? वहीं, जब कांग्रेस नेता से पूछा गया कि सरकार का तर्क है कि चुनाव आयोग किसी विभाग के अंतर्गत नहीं आता, इसलिए इस पर चर्चा नहीं हो सकती। गोगोई बोले- ये बेतुकी बाते हैं, मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति प्रधानमंत्री और सरकार करती है, ऐसे में जवाबदेही भी बनती है।'कांग्रेस की आगामी रणनीति पर विस्तार से चर्चा हो रही है।

दो वोटर आईडी कार्ड का आरोप, तेजस्वी यादव से चुनाव आयोग ने मांगी सफाई

मतदाता सूची से नाम गायब होने का आरोप लगाया था

एजेंसी

तेजस्वी यादव के मतदाता पहचान पत्र पर विवाद गहराया है। नाम सूची से हटने के उनके दावे को चुनाव आयोग ने खारिज किया। अब, भाजपा के 'दो आईडी' आरोप पर, आयोग ने तेजस्वी से दूसरे संदिग्ध ईपीआईसी नंबर का सबूत मांगा है।

चुनाव आयोग ने राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता तेजस्वी यादव से उनके उस दावे का सबूत मांगा है, जिसमें उन्होंने कहा था कि उनका नाम बिहार की मतदाता सूची से हटा दिया गया है। आयोग ने शनिवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में तेजस्वी द्वारा बताए गए मतदाता पहचान पत्र (ईपीआईसी) नंबर की जानकारी मांगी है।

चुनाव आयोग का नोटिस

चुनाव आयोग ने तेजस्वी यादव के दावे को तुरंत खारिज करते हुए कहा कि उनका नाम मसौदा मतदाता सूची में मौजूद था। आयोग ने उन्हें भेजे गए नोटिस में स्पष्ट किया कि उनका नाम मतदान केंद्र संख्या 204 में क्रम संख्या 416 पर अंकित है, जिसका ईपीआईसी नंबर आरएबी0456228 है।यादव को भेजे गए नोटिस में चुनाव आयोग ने कहा, 'यह सूचित किया जाता है कि 02.08.2025 को आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में आपने कहा था कि आपका नाम ड्राफ्ट मतदाता सूची में नहीं है। जाँच के बाद पाया गया कि आपका नाम मतदान केंद्र संख्या 204 (बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के पुस्तकालय भवन) के क्रमांक 416 पर अंकित है, जिसका एपीआईसी नंबर आरएबी0456228 है।'चुनाव आयोग ने आगे कहा, 'आपके प्रेस कॉन्फ्रेंस में दिए गए बयान के अनुसार, आपका एपीआईसी नंबर आरएबी2916120 है। प्रारंभिक जांच के अनुसार, एपीआईसी नंबर आरएबी2916120 आधिकारिक रूप से जारी नहीं किया गया प्रतीत होता है।

अन्नाद्रमुक के सच्चे कार्यकर्ता भाजपा गठबंधन से नाखुश: मुख्यमंत्री स्टालिन

स्टालिन ने आरोप लगाया, विपक्ष के नेता (पलानीस्वामी) जिनके कोई मूल सिद्धांत नहीं है दिल्ली तक गए, भाजपा के सामने घुटने टेके और गठबंधन बनाया। यहां तक कि अन्नाद्रमुक का सच्चा कार्यकर्ता भी इससे नाखुश है।

एजेंसी

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एवं सत्तारूढ़ द्रविड मुनेष कषगम (द्रमुक) अध्यक्ष एम के स्टालिन ने रविवार को प्रतिद्वंद्वी दल अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम (अन्नाद्रमुक) पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ नए सिरे से गठबंधन करने के लिए निशाना साधा और दावा किया कि पार्टी के सच्चे कार्यकर्ता गठबंधन से खुश नहीं हैं। स्टालिन ने आरोप लगाया कि केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा ने तमिलनाडु को धोखा दिया और इसके बावजूद अन्नाद्रमुक प्रमुख के. पलानीस्वामी ने 2026 के विधानसभा चुनावों के लिए भाजपा के साथ गठबंधन किया और अब अपने राज्यव्यापी अभियान के दौरान झूठ फैला रहे हैं।

दिल्ली पुलिस ने बांग्ला को बांग्लादेशी भाषा कहा

टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी बोले- ये गलती नहीं, भाजपा की साजिश है

इस लेटर पर सवाल उठाते हुए टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी ने रविवार को "पर कहा- दिल्ली पुलिस की यह कोई छोटी-मोटी गलती नहीं है। यह भाजपा की बंगाल को बदनाम करने, हमारी सांस्कृतिक पहचान को कमजोर करने और बंगाल को बांग्लादेश से जोड़कर राजनीतिक फायदा उठाने की एक सोची-समझी साजिश है।

एजेंसी

नई दिल्ली ,दिल्ली पुलिस ने 29 जुलाई को बंगा भवन को लिखे एक सरकारी लेटर में बांग्ला भाषा को बांग्लादेशी भाषा बताया। इसमें लिखा था, 'अवैध रूप से भारत में रह रहे 8 बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से बरामद डॉक्यूमेंट्स बांग्लादेशी भाषा में हैं। ऐसे में आगे की जांच के लिए बांग्लादेशी राष्ट्रीय भाषा का एक आधिकारिक अनुवादक उपलब्ध कराएं।'अभिषेक ने लिखा- यह संविधान के आर्टिकल 343 और 8वीं अनुसूची का उल्लंघन है। 'बांग्लादेशी' नाम की कोई भाषा नहीं है। बांग्ला को विदेशी भाषा कहना सिर्फ अपमान नहीं है। बल्कि यह हमारी पहचान, संस्कृति और अपनेपन पर हमला है। बंगाली अपने ही देश में बाहरी नहीं हैं। भाजपा बांग्ला विरोधी है: पिछले कई महीनों से भाजपा शासित राज्यों में बांग्ला भाषी लोगों को निशाना बनाया जा रहा है। उन्हें परेशान किया जा रहा है और हिरासत में लिया जा रहा है। इस वजह से हम भाजपा को बांग्ला विरोधी और जमीनदारी सोच वाली पार्टी कहते हैं। इन्हें भारत की विविधता का कोई सम्मान नहीं है। ये सिर्फ नफरत फैलाकर राजनीति करना जानते हैं। दिल्ली पुलिस-भाजपा माफी मांगे: जांच अधिकारी अमित दत्त को तुरंत सस्पेंड किया जाए। साथ ही दिल्ली पुलिस, भाजपा और गृह मंत्रालय (जिसके मुखिया अमित शाह हैं) जनता से औपचारिक माफी मांगे।

उच्च न्यायालय का गाजियाबाद में मकानों के ध्वस्तीकरण के नोटिस पर यथास्थिति बनाए रखने का निर्देश

पीठ ने 31 जुलाई के आदेश में कहा, इस मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए हम यह भी पाते हैं कि इस बात में कोई विवाद नहीं है कि याचिकाकर्ता पिछले 40-50 साल से उस स्थान पर काबिज हैं।

एजेंसी

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने मकानों को ध्वस्त करने के गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) के नोटिस के मामले में यथास्थिति बनाए रखने का जीडीए को निर्देश दिया है। यह आदेश पारित करते हुए अदालत ने याचिकाकर्ताओं को किसी तीसरे पक्ष का हित करने या विवादित संपत्ति पर कोई विकास करने से भी रोक दिया है। नरेश कुमार और 18 अन्य लोगों की याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायमूर्ति महेश चंद्र त्रिपाठी और न्यायमूर्ति प्रशांत कुमार की खंडपीठ ने प्रतिवादियों- जिला प्रशासन और जीडीए को पुराने बाशिंदों के पुनर्वास की योजना पेश करने का समय देते हुए अगली सुनवाई की तिथि 22 अगस्त निर्धारित की है। पीठ ने 31 जुलाई के आदेश में कहा, इस मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए हम यह भी पाते हैं कि इस बात में कोई विवाद नहीं है ।

बवाल | संबित पात्रा बोले- यह जघन्य अपराध

तेजस्वी यादव की 'डबल पहचान' पर बवाल

एजेंसी

नयी दिल्ली। बिहार में राजनीतिक विवाद तब गहरा गया, जब राजद नेता तेजस्वी यादव ने दावा किया कि बिहार की मतदाता सूची से उनका नाम हटा दिया गया है। उन्होंने इसे लोकतंत्र पर हमला बताया और चुनाव आयोग पर सवाल उठाए। हालांकि, उनके इस आरोप को चुनाव आयोग और पटना के डीएम ने तुरंत खारिज कर दिया। इस मामले में तब नया मोड़ आया जब तेजस्वी के दो अलग-अलग एपिक (इलेक्टोरल फोटो आइडेंटिटी कार्ड) नंबर सामने आए। चुनाव आयोग ने स्पष्ट किया कि 2020 के विधानसभा चुनाव में तेजस्वी ने जिस एपिक नंबर का इस्तेमाल किया था, वह आज भी मतदाता सूची में दर्ज है। वहीं, तेजस्वी ने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में जो एपिक नंबर दिखाया, वह चुनाव आयोग के रिकॉर्ड में नहीं है। इस खुलासे के बाद बीजेपी और एनडीए नेताओं ने तेजस्वी यादव पर तीखा हमला बोला है। बीजेपी सांसद संबित पात्रा ने कहा, तेजस्वी यादव झूठ बोल रहे हैं, उनका नाम और एपिक नंबर मौजूद है। पात्रा ने यह भी सवाल उठाया कि तेजस्वी के पास दो एपिक नंबर कैसे हो सकते हैं,

"बिहार में तेजस्वी यादव के मतदाता सूची से नाम हटने के दावे को चुनाव आयोग ने खारिज कर दिया, जबकि तेजस्वी ने एक और एपिक नंबर पेश किया जो रिकॉर्ड में नहीं है। बीजेपी ने इस मामले को 'जघन्य अपराध' बताते हुए तेजस्वी के खिलाफ चुनाव आयोग से गहन कार्रवाई की मांग की है।

और क्या उनके पास दो वोटर आईडी कार्ड हैं। उन्होंने इसे एक जघन्य अपराध बताते हुए चुनाव आयोग से इस मामले की गहन जांच करने और तेजस्वी के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की है। इससे पहले तेजस्वी के दावे पर चुनाव आयोग ने इसे निराधार करार दिया कि उनका नाम ड्राफ्ट वोटर लिस्ट से गायब है. आयोग से जुड़े सूत्रों ने बताया कि दूसरे वोटर आईडी के पीछे की वास्तविकता को समझने के लिए जांच जारी है. इस बीच, चुनाव आयोग के सूत्रों ने कहा कि आरजेडी नेता तेजस्वी ने 2020 में अपना नामांकन पत्र भरने के लिए एपिक नंबर आरएबी 0456228 का इस्तेमाल किया. एक अधिकारी का कहना है, साल 2015 में भी वोटर लिस्ट में भी उनका यही मतदाता पहचान पत्र नंबर दर्ज था. इस मतदाता पहचान पत्र नंबर से उनका नाम ड्राफ्ट में भी मौजूद है.

'ऑपरेशन सिंदूर' पर बवाल, मणिशंकर अय्यर बोले, थरूर की टीम पाकिस्तान को बेनकाब करने में नाकाम

'ऑपरेशन सिंदूर' पर विवाद, मणिशंकर अय्यर ने शशि थरूर पर निशाना साधा। अय्यर का आरोप है कि थरूर के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने 33 देशों में पहलगाम हमले के लिए पाकिस्तान को जिम्मेदार नहीं ठहराया। 'ऑपरेशन सिंदूर' पहलगाम हमले के बाद भारत की पाकिस्तान पर जवाबी कार्रवाई थी। अय्यर बोले, थरूर टीम विश्व को भारत का संदेश नहीं दे पाई।

एजेंसी

नयी दिल्ली। पूर्व केंद्रीय मंत्री मणिशंकर अय्यर ने कांग्रेस सांसद शशि थरूर के नेतृत्व वाले 'ऑपरेशन सिंदूर' आउटरीच प्रतिनिधिमंडल पर एक नया विवाद खडा कर दिया है। अय्यर ने दावा किया है कि इस प्रतिनिधिमंडल ने दुनिया को भारत का संदेश ठीक से नहीं दिया। अय्यर ने समाचार एजेंसी आईएएनएस से बात करते हुए कहा कि थरूर के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने जिन 33 देशों का दौरा किया, उनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा कि पहलगाम आतंकवादी हमले के पीछे पाकिस्तान का हाथ था। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र या अमेरिका जैसे प्रमुख देशों ने भी इस पर कोई बयान नहीं दिया। अय्यर ने आरोप लगाते हुए कहा, 'शशि थरूर के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल ने जिन 33 देशों का दौरा किया, उनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा कि हमले के पीछे पाकिस्तान का हाथ है। संयुक्त राष्ट्र या अमेरिका ने भी ऐसा नहीं कहा। हम ही हैं जो अपनी छाती पीट रहे हैं और कह रहे हैं कि वास्तव में पाकिस्तान ही इसके लिए जिम्मेदार है।' 22 अप्रैल को पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) ने पहलगाम की बैसरन घाटी में एक आतंकवादी हमला किया था, जिसमें 26 नागरिक मारे गए थे।

सम्पादकीय

भारत पर दबाव की नीति से काम कर रहे ट्रंप, बयानों में देखने को मिले कई उतार-चढ़ाव

भारत ने हाल के वर्षों में अपने निर्यात के पक्ष को जिस तरह मजबूत किया है, उसमें इस तरह के अमेरिकी दबाव क्या व्यापार में सहयोग के बजाय एक प्रतिद्वंद्विता की बिसात बिछाने की कोशिश नहीं हैं? पिछले कुछ समय से अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जिस तरह अलग-अलग देशों पर शुल्क लगाने की बात कर रहे थे, उसे कई अर्थों में दबाव की रणनीति माना जा रहा था। मगर इस मसले पर अब उन्होंने जिस तरह के फैसले लेने शुरू कर दिए हैं, उससे साफ है कि मनमाने तरीके से शुल्क लगाने के फैसले का इस्तेमाल किसी देश की नीति को प्रभावित करने के लिए एक औजार के तौर पर किया जा रहा है। इस क्रम में ट्रंप बीते दिनों बार-बार यह कहते रहे कि वे भारत से आयात किए जाने वाले उत्पादों पर भारी शुल्क लगाएंगे। मगर उनके बयानों में जैसे उतार-चढ़ाव देखे गए, उसके मद्देनजर यह उम्मीद की जा रही थी कि वे अपनी जिद पर विचार करेंगे और भारत को लेकर उदार रुख अपनाएंगे। खासतौर पर इसलिए भी कि बीते कुछ वर्षों के दौरान भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय संबंधों के नए दरवाजे खुले थे और थोड़ी सक्रियता बढ़ी थी। गौरतलब है कि व्यापार वार्ता के संदर्भ में अमेरिका और भारत के बीच जारी बातचीत में कुछ गतिरोध के संकेत सामने आने के बाद डोनाल्ड ट्रंप ने भारत से आयात की जाने वाली वस्तुओं पर एक अगस्त से पच्चीस फीसद शुल्क और रूस से तेल खरीदने पर जुमार्ना लगाने की घोषणा कर दी। ट्रंप का फैसला कोई अचानक नहीं हालांकि यह कोई अचानक हुआ फैसला नहीं लगता है और ट्रंप ने इस बार सत्ता में आने के बाद से ही आयात पर शुल्क लगाने की घोषणाओं पर कुछ जगहों पर अमल करना शुरू कर दिया है। मसलन, कनाडा पर ट्रंप ने पैंतीस फीसद शुल्क लगाने की घोषणा कर दी थी, जबकि उस समय व्यापार वार्ता जारी थी और एक समझौता होने की उम्मीद थी। भारत पर भी पच्चीस फीसद शुल्क तब लगाने की बात कही गई, जब अमेरिका के साथ द्विपक्षीय अंतरिम व्यापार समझौते को लेकर अंतिम दौर की कोशिशें जारी थीं। निर्वाचन आयोग की ओर से तय किए गए नागरिकता प्रमाण पत्र को लेकर सबसे बड़ा विवाद उल्लेखनीय है कि अमेरिका के वातार्कारों का एक समूह पच्चीस अगस्त को भारत के दौरे पर आने वाला है जो प्रस्तावित व्यापार समझौते पर बातचीत के अगले दौर में हिस्सा लेगा। सवाल है कि व्यापार वार्ता के प्रयास जारी रहने और उसके निष्कर्ष तक पहुंचने से पहले ही अमेरिकी राष्ट्रपति को शुल्क लगाने की घोषणा करने की जल्दबाजी करने की जरूरत क्यों लगी। क्या इस फैसले को व्यापार वार्ता में अपने हित में नीतिगत फैसले लेने के लिए दबाव बनाने की रणनीति नहीं माना जाएगा? ट्रंप की ताजा घोषणा से कुछ अन्य देशों के मुकाबले भारत पर कम असर पड़ेगा एक दलील यह दी गई है

आज का विचार

मेहनत

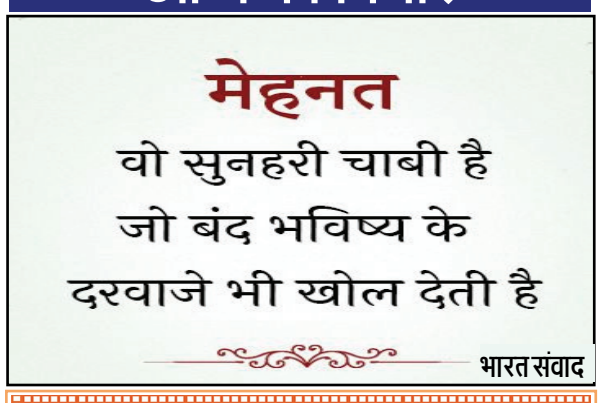

वो सुनहरी चाबी है
जो बंद भविष्य के
दरवाजे भी खोल देती है

भारत संवाद

राशिफल

मेष राशि: कार्यक्षेत्र में आपको अपने छोटे-छोटे कार्यों को पूरा करने के लिए उन लोगों की सहायता की जरूरत पड़ सकती है, जो आपके विरोध में खड़े रहते हैं। लेकिन अगर आप समझदारी और चतुराई से योजना बनाकर हर काम करते हैं

वृषभ राशि: आपको कार्यक्षेत्र में कुछ मुश्किलों और बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। नौकरी करने वालों को कार्यस्थल पर एक साथ कई काम करने पड़ सकते हैं। इसी के चलते आपको प्रेशर भी महसूस होगा।

मिथुन राशि: आपका दिन मिलाजुला रहेगा। कार्यक्षेत्र में कामकाज सही गति से चलेगा और आपके ऊपर से काम का प्रेशर भी थोड़ा कम होगा। ऐसे में अपने निजी जीवन पर लंबे समय बाद आपको सोच-विचार करने का मौका मिलेगा। आने वाले कुछ मौकों को ध्यान में रखते हुए आपको अपने वस्त्र का ख्याल भी रखना होगा।

कर्क राशि : आपको कार्यक्षेत्र में एक साथ कई सारे काम करने पड़ सकते हैं। इसी के चलते आप ज्यादा व्यस्त रहेंगे और भागदौड़ में लगे रहेंगे। व्यापार के मामले में आपको किसी यात्रा पर जाना पड़ सकता है, जिसकी तैयारी करना भी जरूरी होगा। वहीं, अपने कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए आपको नए संपर्क बनाने होंगे और लोगों से मुलाकात करनी होगी।

सिंह राशि: व्यापार के मामले में आपका दिन भागदौड़ भरा रह सकता है और एक साथ कई काम पूरे करने पड़ सकते हैं। व्यापार में सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर आगे बढ़ने से आपको लाभ प्राप्त होगा। इससे आपका कामकाज अच्छा चलेगा।

कन्या राशि: व्यापार के मामले में आपका दिन ज्यादा अच्छा नहीं रहने वाला है। आपको कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में कोई भी फैसला सोच-समझकर लेना बेहतर होगा। आर्थिक मामलों में भी जल्दबाजी दिखाने से बचें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। आप अपने लव लाइफ पर आज ज्यादा ध्यान दे सकते हैं। परिवार के मामले में आपके प्रियजन किसी बात को लेकर आपसे नाराज हो सकते हैं।

तुला राशि: कार्यक्षेत्र में काम धंधा सामान्य गति से चलेगा। लेकिन आपको कोई भी जोखिम भरा कार्य करने या निर्णय लेने से बचना होगा। नौकरी करने वालों को आज किसी काम में सफलता मिल सकती है।

वृश्चिक राशि : आपको जीवन में कुछ बदलावों का सामना करना पड़ सकता है और कई उतार-चढ़ाव का अनुभव भी करेंगे। व्यापार के मामले में आपको संतुलन बनाए रखना होगा, अन्यथा हानि हो सकती है। कार्यस्थल पर आपको कुछ विरोधियों का सामना भी करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य पर भी खास ध्यान दें और परिवार में कटु वाणी के प्रयोग से बचें। ऐसा न करने से विपरीत स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

धनु राशि: दिन अच्छा रहने वाला है और आर्थिक मामलों में भी समय अनुकूल होगा। आपको कहीं से धन लाभ हो सकता है, जिससे मन प्रसन्न रहेगा। नौकरी करने वाले लोग अपने काम में व्यस्त रहेंगे और अपनी कमाई से कुछ चीजें खरीदने से आपको खुशी महसूस होगी।

मकर राशि: आप अपने करियर के बारे में गहराई से सोच सकते हैं और कारोबार को आगे बढ़ाने की योजनाएं भी बनाई जा सकती हैं। नौकरी करने वालों को किसी अच्छे काम का पुरस्कार प्राप्त हो सकता है, जिससे मन प्रसन्न रहेगा।

कुंभ राशि; कार्यक्षेत्र में विवाद उत्पन्न होने की संभावना बनी हुई है। ऐसे में आपको शांति और संयम बनाए रखना होगा। क्रोध करने से स्थिति बिगड़ सकती है। कार्यस्थल पर आप योजना बनाकर चलने से सभी कार्यों को समय पर पूरा कर सकते हैं।

मीन राशि: कार्यक्षेत्र में आपका दिन शुभ रहेगा और आपके मान-सम्मान में भी वृद्धि होगी, जिससे मन प्रसन्न रहेगा। अगर आप कार्यस्थल पर अपने प्रोजेक्ट या जरूरी कार्यों को गंभीरता से पूरा करते हैं, तो इससे उन्नति प्राप्त हो सकती है।

ज्योतिष सेवा केन्द्र
ज्योतिषाचार्य पंडित अतुल शास्त्री

अमेरिका से टैरिफ विवाद के बीच पीएम मोदी का स्वदेशी पर जोर

> प्रधानमंत्री ने कोविड महामारी के समय आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी उत्पादों की खरीद पर जोर दिया था लेकिन बात बनी नहीं। स्वदेशी के मंत्र को महत्व दिया जाना चाहिए लेकिन समस्या यह है कि लोगों के समक्ष पर्याप्त संख्या में सही गुणवत्ता के स्वदेशी उत्पाद उपलब्ध नहीं हैं।

पा अमेरिका से टैरिफ विवाद और विशेष रूप से अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के भारत के खिलाफ विचित्र रवैये के बीच प्रधानमंत्री मोदी ने वाराणसी में स्वदेशी की जो पक्षधरता की, वह सही तो है, लेकिन यह ध्यान रहे कि वे स्वदेशी उत्पाद खरीदने की अपील पहले भी कर चुके हैं और किन्हीं कारणों से स्वदेशी का मंत्र उतना अधिक प्रभावी नहीं दिखा, जितना अपेक्षित था। प्रधानमंत्री ने कोविड महामारी के समय आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी उत्पादों की खरीद पर जोर दिया था, लेकिन बात बनी नहीं। स्वदेशी के मंत्र को महत्व दिया जाना चाहिए, लेकिन समस्या यह है कि लोगों के समक्ष पर्याप्त संख्या में सही गुणवत्ता के स्वदेशी उत्पाद उपलब्ध नहीं हैं। स्वदेशी अपनाने का यह अर्थ नहीं हो सकता और न होना चाहिए कि लोग कम गुणवत्ता के भी उत्पाद खरीदने के लिए तैयार रहें। आज के इस युग में ऐसी अपेक्षा उचित नहीं। यदि लोग स्वदेशी की भावना से प्रेरित होकर देश में बने उत्पाद खरीदना भी चाहें तो अनेक ऐसे उत्पाद पर्याप्त मात्रा में बनते ही नहीं, जिनकी मांग बढ़ती चली जा रही है। इसका परिणाम यह है कि भारतीय बाजारों में चीनी वस्तुएं बढ़ती चली जा रही हैं। अब तो अनेक चीनी वस्तुओं की गुणवत्ता भी संतोषजनक होने लगी है और वे स्वदेशी भारतीय उत्पादों से कम मूल्य की भी होती हैं। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि एक बड़ी संख्या में भारतीय व्यापारी चीनी वस्तुओं का आयात करना अधिक पसंद करते हैं। चीन अभी भी दुनिया का कारखाना बना हुआ है। जैसे दुनिया के अन्य देश चीनी उत्पादों पर अपनी निर्भरता कम नहीं कर पा रहे हैं, वैसे ही भारत भी इस मामले में सक्षम नहीं। ऐसा क्यों है, इस पर हमारे नीति-नियंताओं को गंभीरता से विचार करना होगा। यह ठीक है कि प्रधानमंत्री और उनके सहयोगी कई बार स्वदेशी उत्पाद खरीदने की जरूरत जता चुके हैं, लेकिन क्या हमारे नौकरशाह इसके लिए तत्पर हैं कि भारतीय कारोबारी इस आवश्यकता की पूर्ति करने में सहायक बन सकें। यह ठीक नहीं कि प्रधानमंत्री जिस बात पर बार-बार बल दें और लोगों को याद दिलाएं कि त्योहारों और शादी के अवसर पर स्वदेशी उत्पादों की खरीदारी करें, उस पर नौकरशाह अपने स्तर पर कुछ करते नजर न आएं। यह एक सच्चाई है कि कारोबारी सुगमता के तमाम दावों के बावजूद हमारी नौकरशाही लालफीताशाही से बाहर नहीं आ पा रही है। छोटे-बड़े व्यापारी इसकी शिकायत भी करते रहते हैं। यह सही है कि कारोबारियों को भी अपनी कमर कसनी होगी, लेकिन सरकार को तो यह सोचना ही होगा कि आखिर वियतनाम और इंडोनेशिया जैसे देश उत्पादकता एवं गुणवत्ता के मामले में भारत से आगे निकलते क्यों दिख रहे हैं? अमेरिका से टैरिफ विवाद और विशेष रूप से अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के भारत के खिलाफ विचित्र रवैये के बीच प्रधानमंत्री मोदी ने वाराणसी में स्वदेशी की जो पक्षधरता की, वह सही तो है, लेकिन यह ध्यान रहे कि वे स्वदेशी उत्पाद खरीदने की अपील पहले भी कर चुके हैं और किन्हीं कारणों से स्वदेशी का मंत्र उतना अधिक प्रभावी नहीं दिखा, जितना अपेक्षित था। प्रधानमंत्री ने कोविड महामारी के समय आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी उत्पादों की खरीद पर जोर दिया था, लेकिन बात बनी नहीं। स्वदेशी के मंत्र को महत्व दिया जाना चाहिए, लेकिन समस्या यह है कि लोगों के समक्ष पर्याप्त संख्या में सही गुणवत्ता के स्वदेशी उत्पाद उपलब्ध नहीं हैं। स्वदेशी अपनाने का यह अर्थ नहीं हो सकता और न होना चाहिए कि लोग कम गुणवत्ता के भी उत्पाद खरीदने के लिए तैयार रहें। आज के इस युग में ऐसी अपेक्षा उचित नहीं। यदि लोग स्वदेशी की भावना से प्रेरित होकर देश में बने उत्पाद खरीदना भी चाहें तो अनेक ऐसे उत्पाद पर्याप्त मात्रा में बनते ही नहीं, जिनकी मांग बढ़ती चली जा रही है। इसका परिणाम यह है कि भारतीय बाजारों में चीनी वस्तुएं बढ़ती चली जा रही हैं।

चुनाव आयोग पर वार: लोकतंत्र के लिये खतरे की घंटी

ललित गर्ग

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, और इस लोकतंत्र की बुनियाद जिन संस्थाओं पर टिकी है, उनमें चुनाव आयोग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण, निष्पक्ष और प्रतिष्ठित मानी जाती है। किंतु लोकतंत्र की रक्षा का दावा करने वाले प्रमुख विपक्षी नेता श्री राहुल गांधी जैसे वरिष्ठ जनप्रतिनिधि जब चुनाव आयोग जैसी सर्वोच्च संवैधानिक संस्था पर वोट चोरी में शामिल होने एवं बिहार में मतदाता सूची में धांधली जैसे गंभीर, शरारत भरे, बेहूदे और गुमराह करने वाले आरोप सड़क से लेकर लोकसभा तक में लगाते हैं, तब यह केवल एक संवैधानिक संस्था पर नहीं बल्कि पूरे लोकतांत्रिक ढांचे पर सीधा प्रहार है, यह दुर्भाग्यपूर्ण भी है और चिंताजनक भी। चुनाव आयोग का काम केवल चुनाव कराना नहीं है, बल्कि यह संस्था लोकतंत्र को पारदर्शिता, विश्वसनीयता और निष्पक्षता से चलाने की रीढ़ है। लाखों कर्मचारियों, सुरक्षा बलों और तकनीकी सहयोग के बीच करोड़ों मतदाताओं को चुनाव प्रक्रिया में शामिल करना, भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, एक असाधारण कार्य है। चुनाव आयोग ने समय-समय पर खुद को दबावों से ऊपर उठकर न्यायप्रिय संस्था के रूप में सिद्ध किया है। बिहार में मतदाता सूची के विशेष सघन पुनरीक्षण (सर) का जबरदस्त विरोध करते हुए राहुल गांधी चुनाव आयोग एवं उनके अधिकारियों को डराने एवं धमकाने की भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। राजनीति में जब हार की बौखलाहट हावी हो जाती है, तो ऐसे ही विकृत आरोपों और झूठे नैरेटिव को गढ़ा जाता है। श्री राहुल गांधी द्वारा हाल ही में चुनाव आयोग पर लगाए गए आरोप इसी राजनीतिक हताशा का परिणाम प्रतीत होते हैं। वे चुनाव परिणामों या प्रक्रिया में किसी तकनीकी दोष की बजाय, सीधे आयोग की नीयत पर सवाल उठा रहे हैं, जो कि एक गंभीर लोकतांत्रिक अनाचार एवं अराजकता है। वे अपनी नाकामी का ठीकरा चुनाव आयोग पर फोड़ रहे हैं और वह भी बेहूदे तरीके से। चूंकि उनके ऐसे पुराने आरोप ठहर नहीं रहे इसलिए वे कुंठित हो रहे हैं। वे हताशा में हद पार कर रहे हैं। उन्हें सोचना चाहिए कि वे नेता सदन हैं और उस कांग्रेस के नेता हैं, जिसने देश पर लंबे समय तक शासन भी किया और चुनाव प्रक्रिया में सुधार के कुछ कदम भी उठाए। क्या कांग्रेस के लिए यह शर्म की बात नहीं कि जिस ईवीएम का उपयोग उसके शासनकाल में शुरू हुआ, उसके पीछे उसके ही बड़े नेता पड़े हैं। हाल के वर्षों में ईवीएम के कथित दुरुपयोग के जो भी आरोप लगे, उन्हें तो सुप्रीम कोर्ट ने भी फर्जी पाया। महाराष्ट्र चुनाव को लेकर लगाए गए आरोप भी फर्जी ही पाए गए। राहुल गांधी ने लोकसभा में चुनाव आयोग के खिलाफ उलटा-सीधा नहीं, उलटा ही उलटा इसलिए बोला ताकि सांसद को मिले अधिकारों के तहत उनके खिलाफ कोई कार्रवाई न हो सके। चुनाव आयोग ने राहुल गांधी के नितांत झूठे, बेबुनियाद, निराधार और भारतीय लोकतंत्र की छीछालेदर करने वाले आरोपों का कड़ा प्रतिवाद करने के साथ यह कहकर उन्हें बेनकाब भी किया कि वे किस तरह अपने आरोपों का जवाब सुनने या अपने आरोपों की सच्चाई प्रस्तुत करने आयोग के समक्ष उपस्थित नहीं हुए। आरोपों में दम होता तो वे उपस्थित होते। चुनाव आयोग ने बार-बार उन्हें बुलाया, लेकिन लगता है कि वे खुद को इस संवैधानिक संस्था से भी ऊपर समझ रहे हैं। वे गांधी परिवार के सदस्य हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वे जो मन में आये करते रहे कि आम जनता उनके शरारत भरे आरोपों को सच मान लेगी। जनता का उनके आरोपों पर भरोसा उठ चुका है, उनके आरोपों पर ही नहीं, उन पर भरोसा नहीं रहा तभी तो चुनावों में कांग्रेस की इतनी दुर्गति हो रही है। गृहमंत्री अमित शाह ने लोकसभा में सही सका कि ऐसी हरकतों से कांग्रेस 30 साल तक विपक्ष में ही बैठती रहेगी। वोट चोरी के आरोप लगा रहे राहुल ौर उनके साथी यह क्यों भूल जाते हैं कि झारखंड और जम्मू-कश्मीर विधानसभा के चुनाव कौन जीता था? क्या यह उचित है कि जब तक चुनाव परिणाम अनुकूल हों तब तक चुनाव आयोग निष्पक्ष है, और जब हार हो जाए तो वही आयोग पक्षपाती हो जाए? क्या लोकतंत्र का सम्मान इस प्रकार के दोहरे मापदंडों से किया जा सकता है? राहुल गांधी को यह नहीं भूलना चाहिए कि वे स्वयं उसी निर्वाचन प्रणाली से संसद पहुंचे हैं, जिसे अब वे झूठा और पक्षपाती बताने की कोशिश कर रहे हैं। यह जनता की समझ और चेतना का भी अपमान है। अब यह भी साफ है कि ऐसे लोग मतदाता सूचियों का सत्यापन नहीं होने देना चाहते, भले ही घुसपैठिये वोटर बने रहें, यह तो सबसे बड़ा देशद्रोह है। इस मामले में जनहित याचिकाएं सुनने को आतुर सुप्रीम कोर्ट को भी सक्रिय होना चाहिए। यदि किसी दल या नेता को किसी प्रक्रिया पर आपत्ति है, तो उनके पास कानूनी और संवैधानिक मार्ग खुले हैं। लेकिन सार्वजनिक मंचों से इस तरह झूठी कहानियां गढ़कर जनता को भ्रमित करना, लोकतंत्र की मयार्दाओं को तार-तार करना है। चुनाव आयोग ने बार-बार यह सिद्ध किया है कि वह सत्ता या विपक्ष, दोनों से परे, केवल संविधान और जनादेश के प्रति जवाबदेह है। ऐसे में बार-बार उसे लांछित करना विपक्षी राजनीति की गिरती हुई संस्कृति का परिचायक है। आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी राजनीतिक दल और नेता लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करें, न कि उन्हें क्षति पहुंचाएं। यदि विपक्ष को सशक्त बनना है, तो उसे अपने विचारों की ताकत और जनसमर्थन की ऊर्जा से यह करना होगा, न कि संस्थाओं को कमजोर कर या झूठी शंकाओं का धुंआ फैलाकर। राहुल गांधी जैसे नेताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे जनता के बीच संवेदनशीलता, सच्चाई और गंभीरता का उदाहरण प्रस्तुत करें। किंतु जब वे स्वयं राजनीतिक अपरिपक्वता, अविश्वास और तर्कहीन आलोचनाओं के वाहक बन जाते हैं, तो इससे केवल विपक्ष की साख ही नहीं, बल्कि लोकतंत्र की पूरी संरचना प्रभावित होती है। राहुल गांधी द्वारा यह दावा करना कि पूर्व में महाराष्ट्र एवं हाल ही में बिहार में लाखों फर्जी वोटर जुड़े हैं, यह आरोप न केवल अतिशयोक्ति और तथ्यहीनता का उदाहरण है, बल्कि इससे मतदाताओं में अनावश्यक भय और भ्रम फैलता है। चुनाव आयोग ने स्पष्ट किया कि यह पूरी तरह भ्रामक है और यह मतदाता सूची में प्राकृतिक अद्यतन प्रक्रिया का हिस्सा है, जिसमें मृतकों, स्थानांतरित लोगों या दोहरावों को हटाकर सत्यापन किया जाता है। बिहार राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने भी इसे नियमित कार्यवाही बताते हुए राहुल गांधी के आरोपों को बेबुनियाद बताया है। यह स्पष्ट करता है कि ह्यवोट चोरीह्न का शोर एक राजनीतिक भ्रमजाल है, न कि तथ्यात्मक आपत्ति। राहुल गांधी के ऐसे बचकाने और संवेदनहीन बयानों से देश की लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अफरातफरी और अविश्वास का माहौल बनता है।

ट्रंप टैरिफ की चुनौती को अवसर में बदल पाएगा भारत?

राजेश जैन

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर 20 से 25 प्रतिशत तक आयात शुल्क (टैरिफ) लगाने के संकेत दिए हैं। ट्रंप प्रशासन ने भारत को साफ तौर पर 1 अगस्त तक की समय सीमा दी है। अगर तब तक कोई व्यापार समझौता नहीं हुआ तो भारतीय उत्पादों पर 16 प्रतिशत अतिरिक्त टैक्स लगाया जाएगा। यह शुल्क पहले से लागू 10 प्रतिशत बेसलाइन टैरिफ के अलावा होगा, जिससे कुल शुल्क 30 प्रतिशत से अधिक हो सकता है। यह भारत जैसे विकासशील देश के लिए एक चेतावनी है। इसका सीधा असर भारत के निर्यात पर पड़ेगा—खासकर टेक्सटाइल, ऑटो पार्ट्स, जेम्स-ज्वेलरी और फार्मा सेक्टर पर। जब एक अमेरिकी ग्राहक भारतीय गारमेंट या फार्मा उत्पाद खरीदने की सोचेगा, तो उसे 25% ज्यादा कीमत चुकानी पड़ेगी। ऐसे में भारतीय उत्पाद अमेरिकी बाजार में प्रतिस्पर्धा खो सकते हैं। उदाहरण के तौर पर भारत हर साल अमेरिका को लगभग 9 अरब डॉलर के कपड़े निर्यात करता है। ऐसे में अगर टैरिफ बढ़ गया, तो बांग्लादेश और वियतनाम जैसे प्रतिस्पर्धी देश इस मौके का फायदा उठा सकते हैं, क्योंकि अमेरिका ने उन्हें शुल्क रियायतें दे रखी हैं। यह टैरिफ संकट केवल व्यापार तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसका असर निवेश पर भी पड़ सकता है। भारत की छवि अनिश्चित व्यापारिक वातावरण वाले देश की बन सकती है, जिससे संभावित विदेशी निवेशक हिचक सकते हैं।

भारत की रणनीति

भारत की ओर से संतुलन बनाने की कोशिशें जारी हैं। भारत चाहता है कि टैरिफ 10% से कम रखा जाए और बदले में अमेरिका को कुछ क्षेत्रों में रियायतें दी जाएं। हालांकि भारत ने स्पष्ट किया है कि वह कृषि और डेयरी क्षेत्र को विदेशी कंपनियों के लिए नहीं खोलेगा। अमेरिका लंबे समय से इन क्षेत्रों में प्रवेश चाहता रहा है लेकिन भारत का स्टैंड बिल्कुल साफ है कि अन्नदाता के हितों से कोई समझौता नहीं होगा। भारत गैर-कृषि क्षेत्रों में समझौते के लिए तैयार है और अमेरिका को यह भी प्रस्ताव दे चुका है कि यदि शुल्क घटाए जाते हैं तो भारत अमेरिकी औद्योगिक सामानों पर टैक्स पूरी तरह खत्म करने को तैयार है। इतना ही नहीं, भारत ने बोइंग से विमान खरीदने की संभावना भी जताई है ताकि व्यापार घाटा संतुलित हो सके।

संभावनाएं और उम्मीदें

इस बीच एक अच्छी खबर यह है कि अमेरिका की ट्रेड टीम 25 अगस्त को भारत आ रही है। उम्मीद है कि सितंबर-अक्टूबर तक दोनों देश एक अंतरिम व्यापार समझौते तक पहुंच सकते हैं। पिछली बैठक वॉशिंगटन में हुई थी, जहाँ भारत के मुख्य वातार्कार राजेश अग्रवाल और अमेरिकी प्रतिनिधि ब्रेंडन लिंच ने विस्तृत चर्चा की थी। ट्रंप के हालिया बयान भारत पर राजनीतिक दबाव बनाने की रणनीति का हिस्सा हो सकते हैं। उनका यह कहना कि ह्यअब मैं इंचार्ज हूं और यह सब खत्म होगाह्न, संकेत देता है कि वह भारत को शीघ्र समझौते के लिए बाध्य करना चाहते हैं जबकि भारत के वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने भी साफ किया है कि भारत किसी भी समझौते पर दबाव में हस्ताक्षर नहीं करेगा। भारत सिर्फ उन्हीं शर्तों पर समझौता करेगा जो देश के हित में हों और पूरी तरह से परखी गई हों।

संकट या अवसर?

यह संकट भारत के लिए एक अवसर भी है। यही समय है जब मेक इन इंडिया, पीएलआई स्कीम, वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट जैसी योजनाओं को और मजबूत किया जाए। भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में यह टैरिफ संकट एक उत्प्रेरक की भूमिका निभा सकता है।

इंडिगो की मुंबई-कोलकाता फ्लाइट में पैनिक अटैक फिर 'थप्पड़ कांड' के बाद लापता यात्री का चला पता

मुंबई-कोलकाता की फ्लाइट में पैनिक अटैक के बाद सहयात्री के द्वारा थप्पड़ कांड का शिकार हुए पीड़ित का पता चल गया है। परिवार ने यात्री से संपर्क नहीं होने पर पुलिस से संपर्क किया था, उधर इंडियो ने वीडियो वायरल होने के बाद थप्पड़ मारने वाले यात्री को बैन कर दिया है।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई/गुवाहाटीः मुंबई-कोलकाता इंडिगो फ्लाइट में जिस पैसेंजर के साथ 'थप्पड़ कांड' हुआ था। उसका पता चल गया है। पीड़ित की पहचान असम के कछार निवासी हुसैन अहमद मजूमदार के रूप में हुई है। पहले हुसैन के परिवारवालों ने संपर्क नहीं होने पर थाने में शिकायती पत्र देते हुए असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा से मदद की गुहार लगाई थी। इंडिगो की फ्लाइट में 'थप्पड़ कांड' के बाद वीडियो वायरल हो गया था। पीड़ित के जरिए अब पूरा घटनाक्रम भी सामने आया है। उधर, इंडिगो ने थप्पड़ मारने वाले यात्री को अगले 30 दिनों के लिए बैन कर दिया है। कोलकाता पहुंचने पर आरोपी को पुलिस के हवाले कर दिया गया।पीड़ित ने नहीं ली कनेक्टिंग फ्लाइटसोशल मीडिया पर वायरल हुआ यह मामला सुर्खियों में हैं। इंडियन एक्सप्रेस ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि कि हुसैन अहमद मजूमदार शनिवार को असम के बारपेटा के एक रेलवे स्टेशन पर मिले। उन्होंने सिलचर में उतरने वाली अपनी दूसरी उड़ान के बजाय कोलकाता से असम में अपने गृहनगर के लिए ट्रेन ली थी। उनके गृहनगर कटिगोरा के थाना प्रभारी के हवाले से कहा गया है। यह व्यक्ति कोलकाता में उड़ान के उतरने के बाद असम के बारपेटा पहुंचा। वह बारपेटा के लिए ट्रेन में सवार हुआ। पीड़ित ने 400 किलोमीटर की ट्रेन यात्रा के बाद सिलचर पहुंचेगा।

मुंबई में 30 फीसदी मराठी, राज ठाकरे पर निशिकांत दुबे का बड़ा तंज, बीएमसी चुनावों को लेकर की बड़ी भविष्यवाणी

महाराष्ट्र में हिंदी-मराठी भाषा विवाद और बिहार चुनावों पर चर्चा करते हुए बीजेपी के सांसद निशिकांत दुबे ने राज ठाकरे पर एक बार फिर निशाना साधा है। दुबे ने एक इंटरव्यू में मनसे चीफ के साथ उद्धव ठाकरे पर भी निशाना साधा। उन्होंने बीएमसी चुनावों को लेकर बड़ी भविष्यवाणी की।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबईः महाराष्ट्र में हिंदी-मराठी भाषा विवाद और मनसे की गुंडगर्दी पर बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने करारा प्रहार किया है। बिहार विधानसभा चुनावों को लेकर इंटरव्यू में निशिकांत दुबे ने कहा है अगले बीएमसी चुनावों में राज ठाकरे की अगुवाई वाली मनसे और उद्धव ठाकरे की पॉलिटिक्स का खात्म हो जाएगा। दुबे ने कहा कि मुंबई में सिर्फ 30 फीसदी लोग ही मराठी बोलते हैं। 30 प्रतिशत लोग हिंदी बोलते हैं। ढाई प्रतिशत लोग राजस्थानी बोलते हैं। इसी तरह कुछ लोग गुजराती, भोजपुरी बोलते हैं। इसलिए राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे की भाषा पर यह राजनीति इस बार पूरी तरह से विफल होने वाली है।

बीएमसी चुनावों में मिलेगा जवाब

इंटरव्यू में निशिकांत दुबे ने जोर देकर कहा कि मुंबई के विकास में हिंदी भाषियों का भी योगदान है। दुबे ने कहा कि मैं ये नहीं कह रहा हूं कि पूरा योगदान लेकिन योगदार है। दुबे ने कहा इन लोगों को अंग्रेजी बोलने में दिक्कत नहीं है। दुबे ने बड़ी भविष्यवाणी करते हुए कहा कि इस बार के चुनावों में भाषा की राजनीति का खात्म हो जाएगा। दुबे ने कहा कि जब मनसे नहीं थी तो यही काम शिवसेना करती थी। जब यह खत्म हो जाएगा, तो सब उनके खिलाफ वोट करेंगे, और उन्हें ऐसी राजनीति करने का मौका नहीं मिलेगा, हालांकि जब उनसे पूछा गया कि क्या यह बिहार चुनाव में मुद्दा बनेगा तो उन्होंने इस पर कुछ सीधे नहीं कहा। दुबे ने कहा है कि यह पैसा कमाने का एक जरिया है

हिंदी भाषियों का भी योगदान है

निशिकांत दुबे ने कहा कि उत्तर प्रदेश, बिहार और हिंदी भाषी लोगों ने भी महाराष्ट्र और मुंबई के निर्माण में बड़ा योगदान दिया है। और आज भी आपके पास जो अर्थव्यवस्था है। हम भी उस अर्थव्यवस्था में योगदान दे रहे हैं। हम यह दावा नहीं कर रहे हैं कि सिर्फ हम ही अर्थव्यवस्था में योगदान दे रहे हैं। बल्कि हम भी उसमें योगदान दे रहे हैं। आप किस आधार पर हमें हरा रहे हैं? किसी को अंग्रेजी बोलने में कोई दिक्कत नहीं है। आपने अंग्रेजी कब से बोलना शुरू किया? जब अंग्रेज भारत आए, तब 1760-65 के बीच यहां अंग्रेजी बोली जाने लगी। दुबे ने पूछा कि उससे पहले यहां कोई अंग्रेजी नहीं बोलता था।

फिर गरमा सकता है मामला

मुंबई में मराठी नहीं बोलने वालों की पिटाई करने पर पहले निशिकांत दुबे ने बड़ा हमला बोला था।

फास्ट ट्रैक

'कोई जमीन खरीदने आए तो मत बेचना, बोलो हमें हिस्सेदारी दो', मनसे प्रमुख राज ठाकरे ने फिर उठाया मराठी बनाम बाहरी का मुद्दा

महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) प्रमुख राज ठाकरे ने बाहरी और मराठी के मुद्दे को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि गुजरात में बाहरी व्यक्ति जमीन नहीं खरीद सकता है, लेकिन महाराष्ट्र में आकर कहीं से कोई भी जमीन खरीदता है और उद्योग चालू करता है।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

नवी मुंबईः महाराष्ट्र में मराठी बनाम बाहरी विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। अब एक बार फिर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) प्रमुख राज ठाकरे ने बाहरी और मराठी के मुद्दे को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि गुजरात में बाहरी व्यक्ति जमीन नहीं खरीद सकता है, लेकिन महाराष्ट्र में आकर कहीं से कोई भी जमीन खरीदता है और उद्योग चालू करता है। राज ठाकरे ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि अब आगे से अगर कोई जमीन खरीदने आए तो आप अपनी जमीनें मत बेचना। बल्कि उनको बोलना कि हमें कंपनी में हिस्सेदारी दो और मराठी लोगों को काम पर रखो।

राज ठाकरे ने क्या कहा?

इस अवसर पर राज ठाकरे ने कहा कि मुझे पता चला है कि महाराष्ट्र सरकार सरकारी खर्च पर गुजराती साहित्य सम्मेलन करवाने जा रही है। सरकार ने जानबूझकर यह किया है ताकि हम इस पर प्रतिक्रिया दें और सरकार को राजनीति करने का मौका मिल जाए। हम अब सरकार के बहकावे में नहीं आएंगे, लेकिन जब हमें लगेगा कि सरकार महाराष्ट्र को बर्बाद करने के लिए कदम उठा रही है, तब हम अवश्य आवाज उठाएंगे। आप सभी लोग जागृत रहिए और बारीकी से नजर रखिए कि आखिर सरकार कर क्या रही है।

मराठी व्यक्ति की कब्र पर उद्योग नहीं लगेंगे-राज ठाकरे

ठाकरे ने चुनौती देते हुए कहा कि अगर आप किसी को नए कानून के तहत किसी परियोजना के खिलाफ बोलने पर अर्बन नक्सल कहने वाले हैं, तो उसे गिरफ्तार करके दिखाइए। उन्होंने आगे कहा कि किसी मराठी व्यक्ति की कब्र पर उद्योग नहीं लगेंगे। उद्योगों को मराठी व्यक्ति के सम्मान के अनुरूप लाना होगा। छत्रपति की राजधानी में डांस बार खुले होने से ज्यादा शर्मनाक क्या हो सकता है? बंद डांस बार कैसे खुले रह सकते हैं?

गुजरात से दो बार बिहारी लोगों को भगाया-मनसे प्रमुख

मनसे प्रमुख ने कहा कि हमारे ऊपर आरोप लगाते हैं कि हम हिंदी-मराठी का मुद्दा उठाकर बाहरी लोगों को परेशान करते हैं, लेकिन गुजरात से दो बार बिहारी लोगों को भगाया गया। वहां पर जिस व्यक्ति ने बिहारियों के खिलाफ आंदोलन किया और उन्हें मारकर राज्य के बाहर किया उसे भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने अपनी पार्टी में लेकर विधायक बना दिया। आप अपने राज्य को व्यवस्थित रख रहे हैं और दूसरे के राज्यों में अगर वे अपनी भाषा और संस्कृति को बचाने की बात करें तो उसे आप उसे बदनाम करते हैं।

हिंदी पर सरकार को घेरा

मनसे प्रमुख राज ठाकरे ने कहा कि हमारे मुख्यमंत्री इस बारे में सोचते हैं कि महाराष्ट्र के बच्चे हिंदी कैसे सीखेंगे? लेकिन वे बाहर से महाराष्ट्र आने वालों को मराठी सिखाने की कोशिश नहीं करते। राज ठाकरे ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री और गृह मंत्री गुजराती हैं। महाराष्ट्र की कई परियोजनाएं गुजरात ले जाई गईं। गृह मंत्री एक इंटरव्यू में कहते हैं कि मैं हिंदी भाषी नहीं हूं। मैं गुजराती हूं। हालांकि, अगर हम भाषा, राज्य की बात करें, तो बात संकीर्ण हो जाती है। गुजरात में हिंदी भाषा अनिवार्य नहीं है। फिर महाराष्ट्र में ही हिंदी क्यों?

हमें गौरवान्वित किया...सीजेआई गवई ने विश्व चैंपियन बनीं दिव्या देशमुख की दादी के छुए पैर

देश के मुख्य न्यायाधीश बी आर गवई अपने नागपुर के दौरे में 19 साल की उम्र के विश्व चैंपियन बनने के बाद ग्रैंड मास्टर बनीं दिव्या देशमुख को बधाई देने के लिए उनके घर गए। इस मौके पर गवई ने अपनी पुरानी यादों को भी ताजा किया। देशमुख परिवार अपने रिश्ते को खोला।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

नागपुरः देश के 52वें प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) बीआर गवई ने दिव्या देशमुख के घर जाकर फिडे शतरंज विश्व कप चैंपियन और ग्रैंडमास्टर बनने पर उन्हें बधाई दी। नागपुर की रहने वाली 19 साल की दिव्या देशमुख ने 28 जुलाई को जॉर्जिया के बातुमी में आयोजित महिला विश्व कप के फाइनल में टाईब्रेकर में हमवतन कोनेरू हम्पी को हराकर सबसे कम उम्र की खिलाड़ी के तौर पर यह खिताब जीता है। दिव्या को इस उपलब्धि ने उन्हें उन्हें ग्रैंडमास्टर भी बना दिया है। सीजेआई गवई ने दिव्या को बधाई देते हुए अपनी पुरानी यादों को ताजा किया और कहा कि उन्हें दिव्य की उपलब्धि पर गर्व है। सीजेआई ने कहा कि दिव्या मेरे घर की बेटी ने इतनी बड़ी उपलब्धि हासिल की है। मैं बहुत खुश हूं। सीजेआई से जब पूछा गया कि कहा कि नागपुर के बाद दिल्ली में भी सम्मान समारोह होगा तो उन्होंने कहा कि पूरे देश में सम्मान समारोह होंगे।

दिव्या की जीत पर खुश हुए सीजेआई

महाराष्ट्र के अमरवती जिले से आने वाले सीजेआई गवई ने मीडिया से बातचीत में दिव्या देशमुख के परिवार ने अपनी गहरे रिश्ते का खुलासा किया। सीजेआई ने बताया कि दिव्या के दादा दिवंगत डॉ. केजी देशमुख कभी संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय के कुलपति थे। उनके पिता और केजी देशमुख दोस्त थे। उन्होंने कहा कि हम एक परिवार की तरह पले-बढ़े हैं। यहां आना मेरे लिए पुरानी यादों को ताजा करने जैसा है। सीजेआई बोले, मैं 50-55 साल पीछे चला गया और मैंने फिर से सभी पुरानी यादों को ताजा किया। यह मेरे लिए लंबे समय के बाद सभी से मिलने का शानदार मौका था।दिव्या की दादी के छुए पैर सीजेआई ने कहा कि मैं यहां दिव्या को अपनी शुभकामनाएं देने आया हूं। उसने हम सभी को बहुत गौरवान्वित किया है। इस अवसर पर सीजेआई गवई ने दिव्या की दादी कमल देशमुख के पैर भी छुए।सीजेआई ने कहा कि दिव्या ने शतरंज को नई ऊंचाई दी। दिव्या का परिवार नागपुर में रहता है।सीजेआई दिव्या के घर जाने के अलावा नागपुर में डॉ. आंबेडकर कॉलेज के हीरक जयंती समारोह हुए। शनिवार को नागपुर में दिव्या के लिए महाराष्ट्र सरकार द्वारा आयोजित सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्रीय नितिन गडकरी नहीं पहुंच पाए। उनका संदेश प्रसारित किया गया है। गडकरी ने दिव्या की जीत पर वीडियो कॉल से बधाई दी थी। गडकरी ने अपने संदेश में कहा कि विश्व चैंपियनों को हराकर दिव्या ने भारतीय शतरंज को एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया है।

'हैलो नितिन गडकरी के घर को बम से उड़ा दूंगा', पुलिस कंट्रोल रूम में आया धमकी भरा फोन, मचा हड़कंप

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के नागपुर स्थित घर को बम से उड़ाने की धमकी मिली। यह धमकी शनिवार रात को आई। सूचना पर पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए एक संदिग्ध उमेश राउत को हिरासत में लिया है। पुलिस मामले की गहराई से जांच कर रही है।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

नागपुरः केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के नागपुर स्थित घर को बम से उड़ाने की धमकी मिली। यह धमकी शनिवार रात को आई। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए एक संदिग्ध उमेश राउत को हिरासत में लिया है। शुरूआती जांच में पता चला है कि धमकी नशे में धुत एक व्यक्ति ने दी थी। पुलिस मामले की गहराई से जांच कर रही है।

गडकरी के घर को बम से उड़ाने की धमकी

शनिवार की रात नागपुर पुलिस कंट्रोल रूम को एक कॉल आया। कॉल करने वाले ने नितिन गडकरी के घर को बम से उड़ाने की धमकी दी। इस धमकी के बाद पुलिस तुरंत हरकत में आई। पुलिस ने गडकरी के महाल और वर्धा रोड स्थित दोनों घरों की तलाशी ली। हालांकि उन्हें कोई भी संदिग्ध वस्तु नहीं मिली।

संदिग्ध हिरासत में

कॉल के स्रोत की तलाश में तकनीकी विश्लेषण के माध्यम से पुलिस को पता चला कि कॉल कोतवाली क्षेत्र में एक किराए के मकान से आई थी। पुलिस मौके पर पहुंची और उमेश राउत को हिरासत में ले लिया। प्रारंभिक पूछताछ में उसने बताया कि हालांकि फोन उसके पास था, लेकिन उसने दावा किया कि उसके दोस्त ने कॉल किया था। दिलचस्प बात यह है कि दोनों नागपुर के मेडिकल चौक स्थित एक देशी शराब फैक्ट्री में काम करते हैं।

मामले की बारीकी से जांच कर रही पुलिस

पुलिस उमेश राउत के दावे की विस्तार से जांच कर रही है। शुरूआती जानकारी के मुताबिक, इसके पीछे किसी आतंकी मकसद की आशंका नहीं है। फिर भी पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां बिना कोई जोखिम उठाए पूरे मामले की बारीकी से जांच कर रही हैं।

गडकरी के घर की सुरक्षा बढ़ाई

गडकरी के घर के आसपास सुरक्षा बढ़ा दी गई है। इससे पहले 2023 में बेलगाम जेल में बंद जयेश पुजारी ने नितिन गडकरी को रंगदारी की धमकी दी थी। उस मामले में भी राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) शामिल थी। इसलिए, एजेंसियां इस नए मामले को बेहद गंभीरता से देख रही हैं।

भारतीय रेल द्वारा तीन नई एक्सप्रेस ट्रेनों भावनगर टर्मिनस अयोध्या कैंट एक्सप्रेस; रीवा पुणे (हडपसर) एक्सप्रेस और जबलपुर रायपुर एक्सप्रेस की शुरूआत

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई, विभिन्न राज्यों के बीच रेल संपर्क को सुदृढ़ करने तथा लंबे समय से चली आ रही यात्रियों की मांग को पूरा करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम के रूप में, भारतीय रेल द्वारा तीन नई ट्रेन सेवाओं झ ट्रेन संख्या 19201/19202 भावनगर टर्मिनस झ अयोध्या कैंट (साप्ताहिक) एक्सप्रेस, ट्रेन संख्या 20151/20152 पुणे (हडपसर) झ रीवा (साप्ताहिक) सुपरफास्ट एक्सप्रेस एवं ट्रेन संख्या 11701/11702 रायपुर झ जबलपुर (दैनिक) एक्सप्रेस का शुभारंभ किया गया। इन ट्रेनों की उद्घाटन सेवाओं को दिनांक 03 अगस्त, 2025 (रविवार) को मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव; छत्तीसगढ़ के माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय; माननीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव; माननीय श्रम एवं रोजगार तथा युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया तथा माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री श्रीमती निमुबेन बांभणिया द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। जहाँ भावनगर टर्मिनस झ अयोध्या कैंट एक्सप्रेस को भावनगर टर्मिनस स्टेशन से हरी झंडी दिखाई गई, वहीं रीवा झ पुणे (हडपसर) एक्सप्रेस और जबलपुर झ रायपुर एक्सप्रेस की उद्घाटन सेवाओं को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं रेलवे अधिकारी भी उपस्थित थे। माननीय मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि पिछले 11 वर्षों में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय रेल में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। 34,000 किमी से अधिक नई रेलवे लाइनों का निर्माण किया गया है, और प्रतिदिन लगभग 12 किमी नई लाइन बिछाई जा रही है, जो भारतीय रेल के इतिहास में पहली बार संभव हुआ है। 1300 से अधिक स्टेशनों का पुनर्विकास कर उन्हें विश्व स्तरीय बनाया जा रहा है। साथ ही, वंदे भारत एक्सप्रेस, अमृत भारत एक्सप्रेस, नमो भारत रैपिड रेल जैसी आधुनिक ट्रेनें चलाई जा रही हैं और शीघ्र ही वंदे भारत स्लीपर ट्रेन भी शुरू की जाएगी। इसके अलावा, माननीय रेल मंत्री ने यह भी घोषणा की कि बहुत शीघ्र वाँसजालिया एवं जेतलसर होते हुए पोरबंदर से राजकोट के बीच एक नई ट्रेन सेवा शुरू की जाएगी, जिससे क्षेत्र में रेल संपर्क और बेहतर होगा। राणावाव स्टेशन पर ?135 करोड़ की लागत से एक अत्याधुनिक कोच मेंटेनेंस सुविधा विकसित की जाएगी। सराडीया से वाँसजालिया के बीच नई रेलवे लाइन को भी स्वीकृति दी गई है, जो एक पुरानी मांग रही है। पोरबंदर शहर में भद्रकाली गेट के पास लेवल क्रॉसिंग सं. 3 के स्थान पर यातायात सुगमता हेतु एक नया फ्लाईओवर भी बनाया जाएगा। इसके अतिरिक्त, माल ढुलाई को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भावनगर शहर में दो गतिशक्ति कार्गो टर्मिनल स्थापित किए जाएंगे। भावनगर में नया पोर्ट बनने वाला है, उस पोर्ट में आधुनिक कंटेनर टर्मिनल बनाने का कार्य भी किया जाएगा, जो भावनगर बंदरगाह को देश के प्रमुख बंदरगाहों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बंदरगाहों से भी जोड़ेगा, जिससे अखिल भारतीय कंटेनर कार्गो संचालन को गति मिलेगी। माननीय मंत्री ने यह भी बताया कि मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में अनेक रेल परियोजनाएं तीव्र गति से प्रगति पर हैं। मुंबईझअहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना भी तीव्र गति से आगे बढ़ रही है और इसके जल्द चालू होने से इन दोनों शहरों के बीच यात्रा समय केवल 2 घंटे 7 मिनट रह जाएगा। इसके पश्चात, माननीय मंत्री ने शामपरा स्थित मेसर्स ए.पी.पी.एल. कंटेनर्स लिमिटेड का दौरा किया। यह प्रतिष्ठान कंटेनर इकाइयों का एक प्रमुख निमार्ता है और मेक इन इंडिया पहल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो भारत की निर्माण क्षमताओं को दशार्ता है और देश की आर्थिक प्रगति में योगदान दे रहा है। बाद में, माननीय मंत्री इस्कॉन क्लब, भावनगर में आयोजित विकसित भारत संवादह्न में शामिल हुए। सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत की तीव्र आर्थिक प्रगति को रेखांकित किया। उन्होंने आत्मनिर्भर भारत पहल की सफलता का उल्लेख करते हुए कहा कि कोविड के बाद जब अनेक देशों की अर्थव्यवस्थाएं संकट में थीं, भारत ने निवेश आधारित रणनीति अपनाकर 6झ7% की वृद्धि दर को बनाए रखा। उन्होंने बताया कि भारत आज वैश्विक विनिर्माण केंद्र बन रहा है, पिछले 11 वर्षों में $150 बिलियन मूल्य का इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादन हुआ है और भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल उत्पादक देश बन गया है। उन्होंने साणंद और धोलेरा में विकसित हो रहे सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम का उल्लेख करते हुए कहा कि भावनगरझधोलेरा कनेक्टिविटी की संभावनाएं भी तलाशी जाएंगी। मंत्री ने स्वदेशी संकल्प, एमएसएमई को समर्थन, ₹मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड₹ के प्रति प्रतिबद्धता तथा जनसेवा की भावना से किए जा रहे कार्यों को रेखांकित किया।

हाल में प्रारंभ की गई ट्रेनों की नियमित सेवाओं का विवरण इस प्रकार है:

ट्रेन संख्या 19201/19202 भावनगर टर्मिनस झ अयोध्या कैंट (साप्ताहिक) एक्सप्रेस

ट्रेन संख्या 19201 भावनगर टर्मिनस झ अयोध्या कैंट एक्सप्रेस दिनांक 11 अगस्त, 2025 से प्रत्येक सोमवार को 13:50 बजे भावनगर टर्मिनस से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 18:30 बजे अयोध्या कैंट पहुँचेगी। वहीं, ट्रेन संख्या 19202 अयोध्या कैंट झ भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस दिनांक 12 अगस्त, 2025 से प्रत्येक मंगलवार को 22:30 बजे अयोध्या कैंट से प्रस्थान कर तीसरे दिन (गुरुवार) को 04:45 बजे भावनगर टर्मिनस पहुँचेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में भावनगर पार, सिहोर (गुजरात), धोला, बोटाद, लिंबडी, सुरेंद्रनगर गेट, विरमगाम, महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, फालना, मारवाड़, ब्यावर, अजमेर, किशनगढ़, जयपुर, गांधीनगर जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, ईदगाह आगरा, टूंडला, कानपुर सेंट्रल, लखनऊ जं. तथा बाराबंकी स्टेशनों पर ठहरेगी। इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, एसी 3 टियर (इकोनॉमी), स्लीपर क्लास तथा द्वितीय श्रेणी के सामान्य डिब्बे उपलब्ध रहेंगे।

ट्रेन संख्या 20151/20152 पुणे (हडपसर) रीवा (साप्ताहिक) सुपरफास्ट एक्सप्रेस

ट्रेन संख्या 20151 पुणे (हडपसर) रीवा एक्सप्रेस दिनांक 07 अगस्त, 2025 से प्रत्येक गुरुवार को 15:15 बजे पुणे (हडपसर) से प्रस्थान कर अगले दिन 17:30 बजे रीवा पहुँचेगी। वहीं, ट्रेन संख्या 20152 रीवा पुणे (हडपसर) एक्सप्रेस दिनांक 06 अगस्त, 2025 से प्रत्येक बुधवार को 06:45 बजे रीवा से प्रस्थान कर अगले दिन 09:45 बजे पुणे (हडपसर) पहुँचेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में दौंड कॉर्ड लाइन, अहमदनगर, कोपरगाँव, मनमाड, भुसावल, अकोला, वर्धा, नागपुर, गोंदिया, बालाघाट, नैनपुर, जबलपुर, कटनी एवं सतना स्टेशनों पर ठहरेगी। इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, एसी 3 टियर (इकोनॉमी), स्लीपर क्लास तथा द्वितीय श्रेणी के सामान्य डिब्बे उपलब्ध रहेंगे।

ट्रेन संख्या 11701/11702 रायपुर झ जबलपुर (दैनिक) एक्सप्रेस

ट्रेन संख्या 11701 रायपुर झ जबलपुर एक्सप्रेस दिनांक 04 अगस्त, 2025 से प्रतिदिन 14:45 बजे रायपुर से प्रस्थान कर उसी दिन 22:45 बजे जबलपुर पहुँचेगी। वहीं, ट्रेन संख्या 11702 जबलपुर झ रायपुर एक्सप्रेस दिनांक 05 अगस्त, 2025 से प्रतिदिन 06:00 बजे जबलपुर से प्रस्थान कर उसी दिन 13:50 बजे रायपुर पहुँचेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में दुर्ग, राजनांदगांव, डोंगरगढ़, गोंदिया, बालाघाट, नैनपुर तथा मदन महल स्टेशनों पर ठहरेगी। इस ट्रेन में एसी चेयर कार, चेयर कार तथा द्वितीय श्रेणी के सामान्य डिब्बों की सुविधा होगी।

आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देगी।

युगेंद्र पवार की प्रभादेवी में होगी सगाई, एक बार फिर साथ नजर आएगा पवार परिवार

महाराष्ट्र के चर्चित पवार परिवार में इस समय खुशी का माहौल है। उपमुख्यमंत्री अजित पवार के बेटे जय पवार की सगाई के बाद अब अजित पवार के भाई श्रीनिवास पवार के बेटे युगेंद्र पवार की सगाई आज यानी 3 अगस्त 2025 को मुंबई में होगी। यह समारोह प्रभादेवी स्थित इंडिया बुल्स बिल्डिंग में होगा।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

बारामतीः महाराष्ट्र के चर्चित पवार परिवार में इस समय खुशी का माहौल है। उपमुख्यमंत्री अजित पवार के बेटे जय पवार की सगाई के बाद अब अजित पवार के भाई श्रीनिवास पवार के बेटे युगेंद्र पवार की सगाई आज यानी 3 अगस्त 2025 को मुंबई में होगी। यह समारोह प्रभादेवी स्थित इंडिया बुल्स बिल्डिंग में होगा। जहां युगेंद्र पवार और तनिष्का संजीव कुलकर्णी की सगाई होगी। सांसद शरद पवार, उपमुख्यमंत्री अजित पवार और पवार परिवार के अन्य सदस्य समारोह में मौजूद रहेंगे। इससे यह समारोह परिवार के लिए खास बन जाएगा।पवार परिवार का युवा चेहरा हैं युगेंद्रयुगेंद्र पवार को पवार परिवार का युवा चेहरा माना जाता है। उन्होंने 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में बारामती निर्वाचन क्षेत्र से उपमुख्यमंत्री अजित पवार के खिलाफ चुनाव लड़ा था। इसके अलावा उन्होंने 2024 के लोकसभा चुनाव में अपनी बुआ सुनेत्रा पवार के खिलाफ प्रचार करके राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी थी। युगेंद्र की राजनीतिक सक्रियता के कारण उनके शक्कर खीर समारोह ने सभी का ध्यान खींचा है।पूरा पवार परिवार होगा साथपवार परिवार में कई सालों बाद यह लगातार दूसरा सगाई समारोह है। इससे पहले जब जय पवार की सगाई हुई थी, तब पूरा परिवार एक साथ इकट्ठा हुआ था। आज के समारोह में भी पवार परिवार एक साथ होगा। प्रभादेवी स्थित इंडिया बुल्स बिल्डिंग तनिष्का कुलकर्णी का निवास स्थान है, और यहीं पर यह समारोह आयोजित किया जाएगा।

पनवेल में मनसे कार्यकर्ताओं की गुंडागर्दी, डांस बार में की तोड़फोड़, राज ठाकरे के बयान से बढ़ा विवाद

महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के कार्यकर्ताओं ने शनिवार रात पनवेल स्थित एक डांस बार में तोड़फोड़ की। यह घटनाक्रम मनसे प्रमुख राज ठाकरे के हालिया बयान के बाद देखने को मिला। इसमें उन्होंने रायगढ़ जिले में 'डांस बार' की बढ़ती संख्या को लेकर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी।

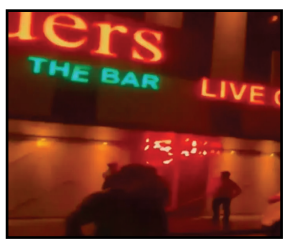

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

पनवेलः नवी मुंबई के पनवेल में महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) कार्यकर्ताओं ने एक डांस बार में तोड़फोड़ की। यह घटना मनसे प्रमुख राज ठाकरे के एक बयान के बाद हुई। उन्होंने रायगढ़ जिले में डांस बार की बढ़ती संख्या पर नाराजगी जताई थी। उन्होंने कहा था कि छत्रपति शिवाजी महाराज की राजधानी में इतने डांस बार होना ठीक नहीं है। शनिवार की रात हुई इस घटना में कार्यकर्ताओं ने लाठी-डंडों से बार में तोड़फोड़ की। उनका कहना था कि यह बार देर रात तक खुला रहता था।शनिवार रात करीब 12 बजे मनसे कार्यकर्ताओं ने पनवेल स्थित 'नाइट राइडर' बार पर धावा बोला। पता चला था कि मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे से कुछ ही दूरी पर स्थित यह बार देर रात तक खुला रहता था। इसके बाद लाठी-डंडों से लैस गुस्साए मनसे कार्यकर्ता वहां पहुंचे और बार में तोड़फोड़ की।

मनसे प्रमुख ने की थी आलोचना

महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के अध्यक्ष राज ठाकरे ने शनिवार को रायगढ़ में डांस बारों की बढ़ती संख्या की कड़ी आलोचना की। राज ठाकरे शेतकरी कामगार पार्टी के वार्षिकोत्सव में बोल रहे थे। रायगढ़ छत्रपति शिवाजी महाराज की राजधानी है। जिले का नाम उस किले के नाम पर पड़ा जहां से महाराजा ने शासन किया था। ऐसे में राज ठाकरे ने सभा में कहा था कि छत्रपति शिवाजी के पवित्र स्पर्श से पवित्र रायगढ़ जिले में सबसे ज्यादा डांस बार हैं।

मराठी लोगों को निचोड़ा जा रहा-राज ठाकरे

उन्होंने अपने बयान में कहा कि यह रायगढ़ जिला है, शिव छत्रपति की राजधानी में डांस बार खुल रहे हैं। खैर, इन सारे डांस बारों का मालिक कौन है? अमराठी लोग हैं। यहां-वहां मराठी लोगों को निचोड़ा जा रहा है। राज ठाकरे ने आगे कहा कि जब तुम्हें लगे कि तुम्हारे कामों से महाराष्ट्र को नुकसान पहुंच रहा है, तब होश में आना। कान और आंखें मत बंद करो। हमारे आसपास जो हो रहा है, उस पर ध्यान दो, वरना आगे चलकर हमें पछतावे से सिर पीटना पड़ेगा।

बेलापुर सेक्टर 8 धरन तालाब क्षेत्र में देशी वृक्षों के रोपण से जैव विविधता का विकास

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

नवी मुंबई , शहर में वृक्ष संपदा बढ़ाने के उद्देश्य से, महाराष्ट्र सरकार के अमृत वृक्षारोपण और माझी वसुंधरा अभियान के अंतर्गत बेलापुर सेक्टर 8 धरन तालाब क्षेत्र में देशी वृक्षों का रोपण किया गया। इस वर्ष मनपा आयुक्त डॉ. कैलाश शिंदे के मार्गदर्शन में, नवी मुंबई की जैव विविधता को बढ़ाने के लिए पशु-पक्षियों के लिए आवास उपलब्ध कराने हेतु देशी वृक्षों का रोपण किया जा रहा है। इसी प्रकार, उद्यान विभाग उपायुक्त किसनराव पलांडे की उपस्थिति में बेलापुर सेक्टर 8 धरन तालाब क्षेत्र में जामुन, बकुल, अमरूद, सीताफल, काजू जैसे 25 फलदार वृक्षों का रोपण किया गया। इसमें बड़ी संख्या में गैर सरकारी संगठन अनुलोम के पदाधिकारियों और सदस्यों ने भाग लिया। नवी मुंबई मनपा पर्यावरण, स्वच्छता और वृक्षारोपण के क्षेत्र में सक्रिय है। जिसने नवी मुंबई शहर को स्वच्छ शहर , रहने के लिए योग्य शहर जैसे कई मिल चुके हैं । वृक्षारोपण कर मनपा शहर पर्यावरण संवर्धन व संरक्षण की दिशा में प्रयासरत है।

शिवसेना यूबीटी के पूर्व नगरसेवक रामदास कांबले शिवसेना में शामिल

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

ठाणे ,मुंबई मनपा के सायन कोलीवाड़ा वार्ड क्रमांक 173 के शिवसेना के पूर्व नगरसेवक रामदास कांबले आज ठाणे स्थित आनंद आश्रम में सार्वजनिक रूप से एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना में शामिल हुए। उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने उन्हें और उनके सभी साथियों को भगवा ध्वज देकर पार्टी में स्वागत किया। इस अवसर पर शिंदे ने युवा सेना कार्यकारिणी सदस्य के रूप में उनकी नियुक्ति की घोषणा की। उनके साथ, शाखा संघटिका नंदा बापू शाहू, उपशाखा संघटिका नंदा पतसुभे, सुचित्रा कावले, दीपिका नेमन, श्वेताली खेड़ापकर, देविका नायर और सभी पदाधिकारी भी पार्टी में शामिल हुए। इसके साथ ही, रेखा तिवारी, मालन सावंत, लक्ष्मी कोटवाल, अनीता सावंत, अपूर्वा पलव, युवा सेना पदाधिकारी सचिन पडवल, सहर येले, विनोद शर्मा भी शिवसेना में शामिल हुए। इस अवसर पर बोलते हुए, शिंदे ने कहा कि मुंबई के कई पूर्व सांसद अभी भी शिवसेना में शामिल हो रहे हैं। पार्टी सदस्यों की आमद अभी कम नहीं हुई है। रामदास कांबले के निर्वाचन क्षेत्र में बड़ी संख्या में नागरिक ट्रांजिट कैंपों में रहते हैं और उनकी अधिकांश समस्याएँ म्हाडा और एसआरए अधिकारियों से संबंधित हैं। वह इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए शिवसेना के साथ आए हैं और उन्होंने घोषणा की कि वह सरकार के माध्यम से इन समस्याओं का समाधान अवश्य करने का प्रयास करेंगे। पिछले ढाई वर्षों के मुख्यमंत्री के रूप में मेरे कार्यकाल के दौरान, हमने शहर में कंक्रीट की सड़कें, मुंबई का सौंदर्यीकरण, बालासाहेब ठाकरे अपना क्लिनिक, कैशलेस चिकित्सा सेवाएँ, गहन सफाई अभियान जैसी कई पहलों को लागू किया है। कोस्टल रोड, अटल सेतु, महालक्ष्मी रेसकोर्स स्थल पर बनने वाले सेंट्रल पार्क जैसी कई परियोजनाएँ शुरू की गई हैं। इस अवसर पर बोलते हुए, उन्होंने कहा कि हमने मुंबई के सर्वांगीण विकास के लिए ईमानदारी से प्रयास किया है और हम मुंबई छोड़कर गए मुंबईवासियों को वापस लाने के लिए भी काम कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। इस अवसर पर पूर्व सांसद राहुल शेवाले, पूर्व शिक्षा समिति अध्यक्ष मंगेश सातमकर और शिवसेना के सभी प्रमुख पदाधिकारी उपस्थित थे।

फास्ट ट्रैक

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार की मौत

ससुराल जाते समय रास्ते में हुआ हादसा, राहगीरों ने देखा खून में लथपथ शव

शाहजहांपुर, एक सड़क हादसे में अज्ञात वाहन की टक्कर से एक बाइक सवार युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान थाना तिलहर क्षेत्र के बंथरा गांव निवासी 22 वर्षीय सुमित के रूप में हुई है। घटना जब सुमित अपनी बाइक से ससुराल जा रहे थे। रूहेलखंड मेडिकल कॉलेज के पास पहुंचते ही एक अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि सुमित की मौके पर ही मौत हो गई। राहगीरों ने खून से लथपथ शव और क्षतिग्रस्त बाइक देखकर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव की शिनाख्त की और परिवार को हादसे की जानकारी दी। परिजनों के मौके पर पहुंचने के बाद पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। परिजनों के अनुसार सुमित खेतीबाड़ी करके अपनी पत्नी बबिता और दो बच्चों का पालन-पोषण करते थे। उनकी ससुराल क्षेत्र के सुनौरा गांव में है। सुमित की कच्ची गृहस्थी थी और उनके अचानक चले जाने से परिवार में कोहराम मच गया है। पुलिस अज्ञात वाहन और चालक की तलाश में जांच कर रही है।

शिविर में 100 से ज्यादा नागरिकों ने किया रक्तदान

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

ठाणे, मनपा में भाजपा के पूर्व गुटनेता और पूर्व नगरसेवक नारायण पवार की ओर से आयोजित रक्तदान शिविर में 100 से ज्यादा नागरिकों ने रक्तदान किया। साथ ही, स्वास्थ्य शिविर, नेत्र शिविर, नोटबुक वितरण, गोविंदा टीमों को सुरक्षा किट आदि सहित विभिन्न सामाजिक गतिविधियाँ भी आयोजित की गईं। पूर्व नगरसेवक नारायण पवार की ओर से रायगढ़ गली, सिद्धेश्वर तालाब क्षेत्र में विभिन्न सामाजिक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। साथ ही, ठाणे शहर के हजारों नागरिकों, कार्यकताओं, विभिन्न रहवासी समाजों, सामाजिक, सांस्कृतिक और खेल संगठनों के पदाधिकारियों ने नारायण पवार को जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर सभी दलों के पदाधिकारियों की उपस्थिति देखने को मिली ।नारायण पवार के जन्मदिन के अवसर पर आयोजित रक्तदान शिविर को लोगों का उत्साहवर्धक समर्थन मिला। 100 से अधिक नागरिकों ने रक्तदान का दायित्व निभाया। इससे पहले, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के जन्मदिन पर नारायण पवार द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में 87 लोगों ने रक्तदान किया था। ठाणे शहर में भाजपा द्वारा आयोजित शिविर में वार्ड क्रमांक 12 ने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। नारायण पवार के जन्मदिन के अवसर पर आयोजित स्वास्थ्य शिविर में डॉ. जे. के. शर्मा और विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा निःशुल्क जाँच की गई। प्लेटिनम अस्पताल द्वारा निःशुल्क हृदय जाँच, स्वराशि नेत्रालय द्वारा निःशुल्क नेत्र जाँच और डॉ. रवींद्र शिंदे के मार्गदर्शन में कमर दर्द, गर्दन दर्द, घुटने के दर्द, स्पोंडिलोसिस के उपचार के लिए निःशुल्क कायरोप्रैक्टिक उपचार शिविर आयोजित किया गया। सिद्धेश्वर तालाब स्थित स्नो व्हाइट अपार्टमेंट में नारायण पवार के कार्यालय में नया राशन कार्ड और दुरुस्ती शिविर का आयोजन किया गया। इसे नागरिकों से अच्छी प्रतिक्रिया मिली। 12 गोविंदा टीमों को सुरक्षा किट प्रदान की जाएगी। एक विकलांग युवक को व्हीलचेयर भी दी गई। हजारों छात्रों को निःशुल्क नोटबुक वितरित की गईं। भाजपा के साथ-साथ विभिन्न मित्र मंडलों के कार्यकताओं ने इन कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए अथक परिश्रम किया।

शिवसेना शहर प्रमुख अरविंद वालेकर के सौजन्य से दो वृद्ध निर्धन दंपत्तियों को मिलेगा मानवता का घर

पूर्व उपनगराध्यक्ष राजेंद्र वालेकर ने किया विकास कार्यों का भूमिपूजन।
भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अंबरनाथ. कहते हैं घर की तामीर तसव्वुर ही में हो सकती है, अपने नक्शे के मुताबिक ये जमीं कुछ कम है। लेकिन समाज के ऐसे घोर गरीब लोग जो अपने सर पर एक सुरक्षित छत के लिए तरसते हैं ऐसे लोगों को सुरक्षित छत प्रदान करने के लिए शिवसेना शहर प्रमुख अरविंद वालेकर और पूर्व उपनगराध्यक्ष राजेंद्र वालेकर के नेतृत्व और मार्गदर्शन में वालेकर परिवार ने मानवता के घर की संकल्पना को साकार किया है। रविवार 3 जुलाई को शिवसेना शहर प्रमुख अरविंद वालेकर के मार्गदर्शन में पूर्व नगराध्यक्ष मनीषा वालेकर, पूर्व उपनगराध्यक्ष राजेंद्र वालेकर, स्थानीय पूर्व नगरसेवक एडवोकेट निखिल वालेकर की उपस्थिति में अंबरनाथ पश्चिम स्थित खामखरवाडी और दीपक नगर में विविध विकास कार्यों जैसे पी.सी.सी. काम और दो निर्धन वृद्ध दंपत्ति लता सिंह और मरियप्पा कीमय्या परिवार को मानवता का घर प्रदान करने हेतु भूमिपूजन का कार्यक्रम पूर्ण विधिविधान के साथ आयोजित किया गया। दोनों निर्धन परिवारों को मानवता का घर मिलने की आस से उनके चेहरों पर गहरी संतुष्टि और खुशी का भाव अलग ही दिखाई दे रहा था। उक्त भूमिपूजन कार्यक्रम के अवसर पर बोलते हुए पूर्व उपनगराध्यक्ष राजेंद्र वालेकर ने कहा कि शिवसेना और वालेकर परिवार समाज के सभी वर्गों के लिए निष्पक्ष और निस्वार्थ भाव से कार्य करता रहता है। मंदिर मदरसा जीर्णोद्धार के बाद अब समाज के अत्यंत निर्धन गरजू लोगों को मानवता का घर बनाकर देना हमारा मिशन है। अब तक हम लोगों के द्वारा भास्कर नगर में 3, बुआपाडा में 2 और गांवदेवी मंदिर एरिया में 1 घर बनाकर दिया जा चुका है। आज ये 12 वे घर का भूमिपूजन किया गया है। ये दोनों ही परिवार अत्यंत कष्टों का सामना कर रहे थे वालेकर परिवार इन परिवारों को मानवता का घर प्रदान करने जा रहा है जिससे इनके जीवन में भी खुशियां और सुरक्षा का भाव आ सके। कीमय्या दंपत्ति को प्रतिमाह दो हजार रुपए भी राशन के लिए प्रदान किए जाते है।स्थानीय नगरसेवक एडवोकेट निखिल वालेकर ने भी अपने संबोधन में कहा कि खामखरवाडी वार्ड एक नवविकसित वार्ड है। यहां बारिश और घरों के पानी निकासी के लिए उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और सांसद डॉ.श्रीकांत शिंदे के आशीर्वाद और दिशानिर्देशन से यहां की प्रमुख समस्या नालियों की समस्या को शीघ्र ही दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। हमने इस वार्ड में विकास के अनेकों कार्य किए है और भविष्य में भी करते रहेंगे।उक्त भूमिपूजन कार्यक्रम में स्थानीय नागरिकों के साथ-साथ शिवसेना शहर शाखा के पदाधिकारी पद्माकर दिघे, अरुण सिंह, पूर्व नगरसेवक शशांक गायकवाड, स्वप्निल भामरे, अप्पा अड़ल, स्वप्निल जाबिर, महिला आघाड़ी की सदस्य नीता परदेशी, दीपक पवार आदि उपस्थित थे।

यूरिया खाद की किल्लत

300 बोरी स्टॉक, लेने वाले हजारों में; पुलिस बुलानी पड़ी

कलान, कलान क्षेत्र के आंधीदेई साधन सहकारी समिति पर यूरिया खाद का गंभीर संकट है। किसानों को पर्याप्त यूरिया खाद नहीं मिल रही है। इस समय फसलों के लिए यूरिया की आवश्यकता है। लेकिन गोदाम में खाद उपलब्ध नहीं है। किसान घंटों लाइन में खड़े होकर खाद का इंतजार करते हैं। शाम को वे खाली हाथ घर वापस जाते हैं। शनिवार को एक गाड़ी से 400 कट्टे खाद आई थी। लेकिन खाद लेने वालों की संख्या हजारों में थी। इससे वहां मारामारी जैसी स्थिति बन गई। भीड़ को देखते हुए समिति के सचिव को पुलिस बुलानी पड़ी। सचिव परमार सिंह ने बताया कि सोमवार तक गोदाम पर खाद उपलब्ध हो जाएगी। उन्होंने आश्वासन दिया कि इसके बाद किसानों को खाद के लिए इधर-उधर नहीं भटकना पड़ेगा। चांदपुर निवासी गौरव यादव ने बताया कि खाद के लिए घंटों लाइन में लगना पड़ रहा है। इसके बावजूद खाद नहीं मिल पा रही है। नयागांव कुदरासी के जितेंद्र सिंह का कहना है कि खेतों में फसल खाद के लिए तैयार खड़ी है। लेकिन समय पर खाद न मिलने से फसल को भारी नुकसान हो रहा है।

दो पक्षों के बीच हिंसक झड़प

लाठी-डंडों से हमले में महिला और उसका बेटा घायल, वीडियो वायरल

शाहजहांपुर, थाना मिर्जापुर क्षेत्र में दो पक्षों के बीच हिंसक झड़प हो गई। इस दौरान जमकर लाठी-डंडे चले। झड़प में दोनों पक्षों के लोग घायल हुए। घटना 1 अगस्त की बताई जा रही है। इस हिंसक झड़प का वीडियो वायरल हो रहा है। जानकारी के अनुसार, शाहजहांपुर के थाना मदनापुर क्षेत्र के गांव बेहटा पाठक की रहने वाली रेखा ने पुलिस को दिए प्रार्थना पत्र में बताया कि वह अपने मायके थाना मिर्जापुर के गांव हरसीपुर आई हुई थी।

शाहजहांपुर में वित्त मंत्री और सांसद का दौरा

- लोधीपुर में रोड और नाली निर्माण का किया लोकार्पण, भाजपा कार्यकताओं ने किया स्वागत

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर, शाहजहांपुर पहुंचे वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना का भाजपा पदाधिकारियों ने स्वागत किया। मंत्री ने सांसद अरुण सागर मंत्री ने वार्ड नंबर तीन के मोहल्ला लोधीपुर में रोड और नाली निर्माण का लोकार्पण किया। शाहजहांपुर पहुंचने पर सांसद समेत अन्य पदाधिकारियों ने वित्त मंत्री का जोरदार स्वागत किया। इसके बाद वे वार्ड नंबर तीन के मोहल्ला लोधीपुर पहुंचे। यहां भाजपा पार्षद रूपेश कुमार वर्मा ने मोहल्लेवासियों के साथ उनका स्वागत किया। वार्ड में बनी गली की रोड और नाली का वित्त मंत्री ने लोकार्पण किया। इसके बाद वे दूसरे कार्यक्रम के लिए रवाना हो गए। वित्त मंत्री को जिले के अलग-अलग क्षेत्रों में कई कार्यक्रमों में शामिल होना है। इनमें एक होटल और एक रेस्टोरेंट का उद्घाटन भी शामिल है। सांसद अरुण सागर ने कहा कि डबल इंजन की सरकार में देश में हर तरफ विकास की गंगा बह रही है। रोड से लेकर अस्पताल और स्कूल से लेकर हाईवे बनाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि शाहजहांपुर में भी शहर से लेकर गांवों तक सड़कों का जाल बिछाया जा चुका है। अगर कहीं कुछ सड़कें रह गई हैं तो उन्हें भी जल्द बनवा दिया जाएगा। शाहजहांपुर में सीवर लाइन का कार्य पूरा हो चुका है और लोगों को जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

चाऊमीन विक्रेता भाइयों पर जान लेवा हमला

तिलहर में 8 नामजद और 40 अज्ञात के खिलाफ केस, एक आरोपी गिरफ्तार

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर, जनपद की मीरानपुर कटरा पुलिस ने चाऊमीन विक्रेता भाइयों पर हुए हमले के एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। मुहल्ला बाजार निवासी हिमांशु गुप्ता उर्फ छोटू को खुदागंज रोड पर प्राइवेट बस स्टैंड के निकट से पकड़ा गया। मुहल्ला तहबरगंज निवासी आलोक और विवेक दोनों भाई मुख्य बाजार घास पुलिया पर अपनी चाऊमीन की दुकान पर बैठे थे। इसी दौरान नगर के दर्जनों लोगों ने उन पर हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। घायल युवकों के भाई अभिषेक की शिकायत पर पुलिस ने 8 नामजद और 40 अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था। मीरानपुर कटरा थानाध्यक्ष जुगल किशोर पाल ने बताया कि एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। शेष आरोपियों की लगातार तलाश की जा रही है।

प्राइवेट बस और पिकअप की भिड़ंत

हादसे में चालक की मौत, दो लोग घायल, हाईवे पर हादसा

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर, जनपद की तिलहर कोतवाली क्षेत्र के नेशनल हाईवे स्थित सरयू पुलिया पर प्राइवेट बस और पिकअप की भिड़ंत में एक व्यक्ति की मौत हो गई। इस दुर्घटना में दो अन्य लोग घायल हुए हैं। रविवार तड़के हुई इस दुर्घटना में पिकअप चालक मुसाहिब (33) की मौके पर ही मौत हो गई। मुसाहिब सहारनपुर जिले के वर्था कायस्थान का रहने वाला था। घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली प्रभारी राकेश कुमार तोमर पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। दुर्घटना में घायल हुए महताब (38) को गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर किया गया है। महताब बिहार के समस्तीपुर जिले के पटखोली गांव का रहने वाला है। इसी दुर्घटना में घायल हुए 18 वर्षीय सिराज का भी उपचार किया जा रहा है। सिराज बहराइच के गौरु गांव का निवासी है। राहगीरों ने दुर्घटना की सूचना पुलिस को दी थी। पुलिस ने सभी घायलों को नगर के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया। कोतवाली प्रभारी राकेश कुमार तोमर ने बताया कि मृतक चालक के परिजनों को घटना की सूचना दे दी गई है।

खाने में नशीला पदार्थ मिलाकर परिवार को बेहोश किया

प्रेमी के साथ नकदी और जेवर लेकर युवती फरार, मामला दर्ज

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर, थाना अल्हागंज क्षेत्र में एक युवती ने अपने परिवार को खाने में नशीला पदार्थ मिलाकर खिलाया। परिवार के बेहोश होने के बाद वह अपने प्रेमी के साथ घर से भाग गई। पीड़ित पिता ने थाने में दर्ज कराई शिकायत में बताया कि उनकी 21 वर्षीय बेटी का क्षेत्र के एक युवक से काफी समय से प्रेम संबंध चल रहा था। उन्होंने आरोप लगाया कि 19 जुलाई की रात बेटी और उसके प्रेमी ने मिलकर खाने में नशीला पदार्थ मिला दिया। इस खाने को खाने के बाद परिवार के सभी सदस्य बीमार हो गए। बीमार परिवार को पहले अल्हागंज सीएचसी ले जाया गया। बाद में उन्हें फरुर्खाबाद रेफर किया गया, जहां उनका उपचार किया गया। पिता का आरोप है कि जब परिवार के सदस्य बेहोश थे, तब युवती घर में रखे 42 हजार रुपये और जेवरात लेकर अपने प्रेमी के साथ फरार हो गई। पीड़ित ने बताया कि जब उन्होंने युवक के परिवार से इसकी शिकायत की, तो उनके साथ मारपीट की गई। पिता ने आशंका जताई है कि खाने में नशीला पदार्थ मिलाने में युवक के परिवार का भी हाथ हो सकता है। पुलिस ने मामले में एफआईआर दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

अनुप्रिया पटेल ने बाढ़ प्रभावित इलाकों का किया दौरा

स्थानीय लोगों से सुनी समस्याएं, जिलाधिकारी को राहत सुविधाएं जल्द उपलब्ध कराने के निर्देश

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मिर्जापुर, केंद्रीय राज्य मंत्री और क्षेत्रीय सांसद अनुप्रिया पटेल ने रविवार को नारायणपुर ब्लॉक के बाढ़ प्रभावित ग्राम बेला सहित अन्य क्षेत्रों का दौरा किया। उन्होंने गंगा नदी के बढ़े जलस्तर से प्रभावित गांवों की स्थिति का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने स्थानीय लोगों से संवाद कर उनकी समस्याएं भी सुनीं। केंद्रीय मंत्री ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत और बचाव कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने जिलाधिकारी पवन कुमार गंगवार को सभी आवश्यक राहत सुविधाएं शीघ्र उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने उन्हें जिला प्रशासन द्वारा किए जा रहे राहत प्रयासों की विस्तृत जानकारी दी। सांसद ने कहा कि जलस्तर में लगातार वृद्धि के कारण स्थिति गंभीर हो रही है। प्रशासन युद्धस्तर पर राहत कार्यों को अंजाम दे रहा है। उन्होंने नावों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। प्रभावित फसलों का सर्वे करने और कीटनाशकों का छिड़काव करने के भी आदेश दिए। राहत शिविरों में खाने-पीने और रहने की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश भी दिए गए। अनुप्रिया पटेल ने आश्वासन दिया कि प्रभावित किसानों को उचित मुआवजा दिया जाएगा।

गंगा की बाढ़ से हजारों बीघा मक्के की फसल बबार्द

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मिर्जापुर, सीखड़ विकासखंड के गांवों में गंगा नदी में आई बाढ़ से हजारों बीघा मक्के की फसल पूरी तरह से नष्ट हो गई है। किसानों ने बड़े पैमाने पर मक्के की खेती की थी, लेकिन बाढ़ के पानी में डूबने से फसल बर्बाद हो गई। इस आपदा का फायदा उठाते हुए स्थानीय व्यापारी किसानों से मात्र 8 से 10 रुपये प्रति किलो के निम्न दर पर मक्का खरीद रहे हैं। वहीं, इसी मक्के को व्यापारी मंडियों में काफी अधिक कीमत पर बेच रहे हैं। बाढ़ से हुई भारी क्षति के कारण किसान गंभीर आर्थिक संकट में हैं। उनके पास कोई विकल्प न होने के कारण वे अपनी फसल को कम दामों पर बेचने को मजबूर हैं। किसान अपनी पीड़ा और दुख लोगों के सामने व्यक्त कर रहे हैं। व्यापारी इस स्थिति का पूरा लाभ उठा रहे हैं। वे सस्ते दामों पर मक्का खरीदकर मंडियों में ऊंचे दामों पर बेचकर मुनाफा कमा रहे हैं। किसानों के पास अपनी फसल को बचाने या उचित मूल्य पर बेचने का कोई उपाय नहीं है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्र के किसान सरकार से मदद की उम्मीद कर रहे हैं।

भारत संवाद परिवार

1-संरक्षक-भारत संवाद
डॉ राम किशोर शर्मा
पूर्व विभागाध्यक्ष इलाहाबाद विश्व विद्यालय कबीर सम्मान 2021 से सम्मानित,
2-संरक्षक-भारत संवाद
आचार्य पं0 पृथ्वीनाथ पाण्डेय
भाषाविज्ञानी एंव मीडियाध्ययन विशेषज्ञ
3-संरक्षक-भारत संवाद
गजानन महतपुरकर
(सुपरिचित कवि, लेखक, गीतकार, मंच संचालक, स्वतंत्र पत्रकार एवं सदस्य, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी तथा पश्चिम रेलवे, चर्चगेट के वरिष्ठ जनसम्पर्क अधिकारी पद से सेवानिवृत्त)
4-कला एवं मनोरंजन संपादक
(भारत संवाद)
जगन्नाथ तिवारी
5-उपसंपादक (भारत संवाद)
माता प्रसाद शर्मा
6-प्रभारी प्रयागराज संस्करण
(भारत संवाद)
आशीष कुमार शर्मा

रूस के कामचटका में 600 साल बाद ज्वालामुखी फटा

6 किमी ऊंचाई तक राख का गुबार फैला; यहां दुनिया का छठा बड़ा भूकंप आया था

एजेंसी

मॉस्को, रूस के कामचटका में 600 साल बाद क्रशेनिनिकोव ज्वालामुखी में पहली बार विस्फोट हुआ।

कामचटका के इमरजेंसी मंत्रालय ने रविवार को बताया कि 2 अगस्त को इस ज्वालामुखी में विस्फोट हुआ। मंत्रालय ने कहा- 1856 मीटर ऊंचे क्रशेनिनिकोव ज्वालामुखी में विस्फोट के बाद 6 हजार मीटर की ऊंचाई तक राख का गुबार फैल गया।' इसके चलते इस इलाके का एयर स्पेस बंद कर दिया गया।

वैज्ञानिकों का मानना है कि इस विस्फोट का संबंध 4 दिन पहले रूस के कामचटका आइलैंड में आए 8.8 तीव्रता के भूकंप से हो सकता है। इससे पहले बुधवार को कामचटका प्रायद्वीप पर स्थित क्ल्यूचेव्स्काया सोपका ज्वालामुखी में भी विस्फोट हुआ था।

सोपका ज्वालामुखी यूरोप और एशिया में सबसे एक्टिव ज्वालामुखी है। यह दोनों ज्वालामुखी विस्फोट रूस के जिस इलाके में हुए हैं, वह रिंग ऑफ फायर के पास मौजूद है। रिंग ऑफ फायर ऐसा इलाका है जहां कई कॉन्टिनेंटल के साथ ही ओशियनिक टेक्टोनिक प्लेट्स भी हैं। ये प्लेट्स आपस में टकराती हैं तो भूकंप आता है, सुनामी उठती है और ज्वालामुखी फटते हैं। दुनिया के 90% भूकंप इसी रिंग ऑफ फायर क्षेत्र में आते हैं। यह क्षेत्र 40 हजार किलोमीटर में फैला है। दुनिया में जितने सक्रिय ज्वालामुखी हैं, उनमें से 75% इसी क्षेत्र में हैं। 15 देश इस रिंग ऑफ फायर की जद में हैं।

कितने देशों में है रिंग ऑफ फायर का असर? जापान, रूस, फिलिपींस, इंडोनेशिया, न्यूजीलैंड, अंटार्कटिका, कनाडा, अमेरिका, मैक्सिको, ग्वाटेमाला, कोस्टा रिका, पेरू, इक्वाडोर, चिली, बोलिविया।

जुलाई में कामचटका में 6 ताकतवर भूकंप आए

बुधवार का आया भूकंप दुनिया का छठा सबसे शक्तिशाली भूकंप था। इसके बाद रूस, अमेरिका, जापान और चिली समेत कई देशों ने सुनामी की चेतावनी जारी की थी। जापान ने अपने फुकुशिमा परमाणु रिएक्टर को खाली करा लिया था और टोक्यो में करीब 20 लाख लोगों को घर खाली करने का आदेश दिया गया था। जुलाई में ही कामचटका के पास समुद्र में 6 शक्तिशाली भूकंप आए थे। इनमें से दूसरे सबसे बड़े भूकंप की तीव्रता 7.4 थी। भूकंप का केंद्र जमीन से 20 किलोमीटर की गहराई में था। 4 नवंबर 1952 को कामचटका में 9 तीव्रता का भूकंप आया था। इससे कई इलाकों में 9.1 मीटर ऊंची लहरें उठी थी, हालांकि इसके बादजूद किसी की मौत नहीं हुई थी।

खालिस्तान विरोधी एक्टिविस्ट की अमेरिका में मौत

खालिस्तानी समर्थकों से धमकियां मिल रही थीं, पुलिस जांच में जुटी

एजेंसी

वॉशिंगटन डी सी, कैलिफोर्निया में रहने वाले भारतीय-अमेरिकी व्यवसायी और खालिस्तानी विचारों के विरोधी सुखी चहल की संदिग्ध परिस्थिति में मौत हो गई है। उनके करीबी दोस्त जसपाल सिंह ने शनिवार को बताया कि 31 जुलाई को सुखी को एक परिचित ने अपने घर डिनर पर बुलाया था। डिनर के बाद अचानक उनकी तबीयत बिगड़ गई और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। जसपाल ने बताया कि सुखी पूरी तरह स्वस्थ थे, और उनकी अचानक मौत ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं। सुखी खालिस्तानी तत्वों की कड़ी आलोचना

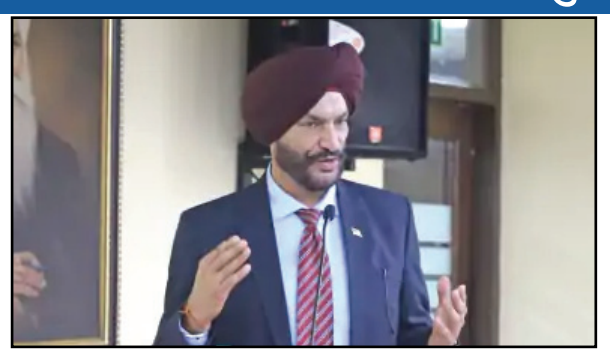

करते थे और 17 अगस्त को वाशिंगटन डीसी में होने वाले खालिस्तान रेफरेंडम (जनमत संग्रह) का खुलकर विरोध कर रहे थे। 'द खालसा टुडे' के संस्थापक और सीईओ सुखी को खालिस्तानी समर्थकों से लगातार धमकियां मिल रही थीं। फिर भी, वे अपनी बात पर अडिग रहे। उनके परिचित बूटा सिंह कलेर ने कहा कि उनकी मौत से भारत समर्थक समुदाय में शोक की लहर है। पुलिस इस मामले की जांच कर रही है, और पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से सच सामने आएगा। सुखी भारतीय प्रवासियों को अमेरिका के कानूनों का पालन करने और अपराध से दूर रहने की सलाह देते थे। हाल ही में उन्होंने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा था, 'अमेरिका में कानून का पालन जरूरी है। अपराध करने पर वीजा रद्द हो सकता है और वापसी मुश्किल हो सकती है।' सुखी चहल का जन्म भारत के पंजाब के मानसा जिले में हुआ था। वे 1992 में अमेरिका चले गए। उन्होंने 1988 से 1992 तक लुधियाना के गुरु नानक इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ाई की और पेशे से कंप्यूटर इंजीनियर थे। उन्होंने स्टैनफोर्ड और यूसी बर्कले में कंप्यूटर और प्रबंधन से जुड़े विशेष कोर्स भी किए। सुखी ने सिलिकॉन वैली की कई कंपनियों में वरिष्ठ प्रबंधन, इंजीनियरिंग और सलाहकार के रूप में काम किया। वे 2015 से कैलिफोर्निया की गैर-लाभकारी संस्था पंजाब फाउंडेशन के संस्थापक और अध्यक्ष थे, जो गरीब बच्चों को शिक्षा के लिए समर्थन देती है। चहल द खालसा टुडे के संस्थापक और अध्यक्ष भी थे। सुखी सामाजिक रूप से बहुत सक्रिय थे और उन्होंने हिंदू, सिख और यहूदी समुदायों के बीच एकता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई। द खालसा टुडे के मुताबिक वे भारत सरकार और अमेरिकी व्यापारिक नेताओं के साथ मिलकर भारत-अमेरिका के बीच मजबूत रणनीतिक संबंधों को बढ़ावा देने में सक्रिय थे। ब्रिटेन ने 31 जुलाई को जारी एक रिपोर्ट में भारत को 12 दमनकारी देशों की सूची में शामिल किया, जिसमें खालिस्तानी संगठनों का जिक्र किया गया।

इजराइली मंत्री ने अल-अक्सा मस्जिद परिसर में प्रार्थना की

यह इस्लाम की तीसरी सबसे पवित्र मस्जिद, यहां यहूदियों के प्रार्थना करने पर रोक

एजेंसी

तेल अवीव, इजराइल के सुरक्षा मंत्री इतामार बेन-ग्विर ने रविवार को यरुशलम में अल-अक्सा मस्जिद के कैंपस में जाकर प्रार्थना की। एक यहूदी संगठन ने इसका वीडियो जारी किया, जिसमें ग्विर कुछ लोगों के साथ मस्जिद कैंपस में घूमते और प्रार्थना करते नजर आए। मक्का और मदीना के बाद अल-अक्सा इस्लाम की तीसरी सबसे पवित्र मस्जिद है। नियमों के मुताबिक, यहूदी लोग यहां जा सकते हैं, लेकिन प्रार्थना नहीं कर सकते। सोशल मीडिया पर विवाद बढ़ता देख इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि ये नियम नहीं बदले हैं और न ही बदलेंगे। बेन-ग्विर का यह दौरा 'तिशा बाव' के दिन हुआ, इस दिन यहूदी लोग प्राचीन मंदिरों के तबाही की याद में उपवास करते हैं। बेन-ग्विर ने कहा कि उन्होंने गाजा में हमास के खिलाफ इजराइल की जीत और बंधकों की रिहाई के लिए प्रार्थना की। उन्होंने गाजा पर पूरी तरह कब्जा करने की मांग भी दोहराई। इस परिसर की देखभाल करने वाली संस्था ने बताया कि बेन-ग्विर सहित 1,250 लोग वहां गए और कुछ ने प्रार्थना की, नारे लगाए और डांस किया। वहीं, फलस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास के प्रवक्ता नबील अबू रुदैन ने इस दौरे की निंदा की और इसे सारी हदें पार करने वाला बताया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय, खासकर

अमेरिका से दखल देने और गाजा युद्ध रोकने की मांग की। अल-अक्सा मस्जिद येरुसलम में स्थित है। जॉर्डन की एक धार्मिक संस्था इस मस्जिद कैंपस को संभालती है। 1967 में इजराइल जंग के बाद जॉर्डन और इजराइल के बीच एक समझौता हुआ था। इसमें तय हुआ था कि अल-अक्सा मस्जिद के भीतर के मामलों पर जॉर्डन के इस्लामिक वक्फ ट्रस्ट का कंट्रोल रहेगा और बाहरी सुरक्षा इजराइल संभालेगा। ऐसे में कई बार सुरक्षा को लेकर इजराइल की पुलिस मस्जिद में घुस जाती है। इससे जंग जैसे हालात हो जाते हैं। जॉर्डन और इजराइल के बीच समझौते में इस बात पर भी सहमति बनी थी कि गैर-मुस्लिमों को मस्जिद के अंदर आने की इजाजत होगी, लेकिन उनको वहां प्रार्थना करने की इजाजत नहीं होगी। बेन-ग्विर इजराइल के सबसे विवादित नेताओं में एक हैं। वे इजराइल की धुर दक्षिणपंथी पार्टी रिलिजियस जिओनिस्ट से ताल्लुक रखते हैं। बेन-ग्विर कट्टरपंथी यहूदी नेता माएर कहाने की काहानिस्ट विचारधारा को मानते हैं। बेन-ग्विर, मीर कहाने को धर्मात्मा मानते हैं। उनकी काहानिस्ट विचारधारा का मानना है कि इजराइल में गैर यहूदियों को मतदान तक का अधिकार नहीं होना चाहिए। बेन-ग्विर 2021 में पहली बार इजराइली संसद नीसेट के सदस्य बने। वे हमेशा से फिलिस्तीनियों से शांति वार्ता करने के खिलाफ रहे हैं। वे उन इजराइली सैनिकों को लीगल माफी देना चाहते हैं, जो फिलिस्तीनियों को गोली मारने के दोषी पाए गए हैं। बेन-ग्विर 25 नवंबर 2022 को इजराइल के राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री बने थे। बाद में, उन्होंने जनवरी 2025 में गाजा युद्धविराम समझौते के विरोध में इस्तीफा दे दिया, लेकिन मार्च 2025 में फिर से मंत्री पद पर नियुक्त हो गए।

ट्रम्प ने 194 दिनों में अपने ही 34 फैसले पलटे

टैरिफ पर ऐलान कर 28 बार पीछे हटे; फैसले लेते, पर टिकते नहीं

एजेंसी

वॉशिंगटन डीसी, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प को सत्ता में आए 194 दिन ही हुए हैं, लेकिन उनका यह कार्यकाल उथल-पुथल और यू-टर्न से भरा नजर आ रहा है। सबसे ज्यादा अस्थिरता टैरिफ नीतियों में दिखी है। अब तक ट्रम्प टैरिफ से जुड़े 28 फैसलों पर यू-टर्न ले चुके हैं। ट्रम्प प्रशासन ने अब तक रिकॉर्ड 178 एग्जीक्यूटिव ऑर्डर साइन किए हैं, यानी हर एक दिन लगभग एक नया आदेश दिया है। इनमें से 34 फैसले ऐसे हैं जो

खुद ट्रम्प ने पलटे हैं। उदाहरण के तौर पर, रिसर्च फंडिंग पर रोक के आदेश को महज 3 दिन में ही पलटा गया। गैस और ऊर्जा क्षेत्र में दी गई राहतों को वापस लेने के फैसले पर भी दो हफ्ते बाद यू-टर्न ले लिया। अवैध प्रवासियों पर क्रैकडाउन से लेकर, टैरिफ और एलजीबीटीक्यू के अधिकारों तक, ट्रम्प ने अपने आदेशों से कई बार यू-टर्न लिया है। ट्रम्प के यू-टर्न के चलते सबसे ज्यादा भ्रम इंडस्ट्री वर्ल्ड में है। इन फैसलों की तेजी और विरोधाभास का नतीजा यह है कि अदालतों में ट्रम्प प्रशासन के आदेशों के खिलाफ केस की बाढ़ आ गई है। अमेरिका की संघीय अदालतों पर अचानक फैसला-पलटने और कानूनी विरोध का दबाव बढ़ गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि ट्रम्प ने 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' के नाम पर जो फैसले लिए, उन पर यू-टर्न लेकर प्रशासन को उलझन और जनता को भ्रम की स्थिति में डाल दिया है। ट्रम्प के बिना सोचे-समझे लिए फैसलों पर कोर्ट भी सख्त है। कोर्ट अब तक ट्रम्प प्रशासन के आदेशों के खिलाफ दायर याचिकाओं में 200 से ज्यादा मामलों पर स्टे लगा चुका है। इनमें से अधिकांश केस में संघीय अदालतों ने हस्तक्षेप कर नीतियों को असंवैधानिक या जल्दबाजी में लिया गया पाया। उदाहरण के तौर पर बर्थ-राइट सिटिजनशिप को समाप्त करने की कोशिश पर कई फेडरल जजों ने तत्काल रोक लगा दी। इसे 14वें संशोधन के उल्लंघन के रूप में रोका।

कांग्रेस के डीएनए में तानाशाही भरी :अनिल विज

आतंकवाद की नींव उसी ने रखी, लोकतंत्र बचाने के लिए बीजेपी जान लगा देगी

एजेंसी

अंबाला , हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन और श्रम मंत्री अनिल विज ने कांग्रेस और राहुल गांधी पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि जिस तरह भारत की जनता ने अंग्रेजों के शासन को हराकर प्रजातंत्र स्थापित किया, उसी तरह अब भाजपा उस प्रजातंत्र की रक्षा के लिए अपनी जान लगा देगी। विज मीडिया से बातचीत के दौरान कांग्रेस सांसद राहुल गांधी द्वारा चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाने को लेकर जवाब दे रहे थे। विज ने राहुल गांधी के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि राहुल को झूठ बोलने की आदत है और कांग्रेस ने देश की संवैधानिक संस्थाओं के खिलाफ एक साजिशन जेहाद छेड़ रखा है। उन्होंने आरोप लगाया कि कभी राहुल गांधी ईडी, सीबीआई और अदालतों पर सवाल उठाते हैं और अब चुनाव आयोग को लेकर एटम बम जैसी भाषा इस्तेमाल कर रहे हैं। विज ने कहा कि ये सारी संस्थाएं लोकतंत्र के मजबूत स्तंभ हैं, लेकिन कांग्रेस उन्हें गिराकर देश में तानाशाही लाना चाहती है क्योंकि कांग्रेस के डीएनए में तानाशाही भरी हुई है। उस वक्त आम नागरिकों के मौलिक अधिकार छीन लिए गए थे, प्रेस पर सेंसरशिप थोप दी गई थी और विपक्षी दलों के करीब डेढ़ लाख नेताओं और कार्यकताओं को जेल में डाल दिया गया था। विज ने कहा कि यही कांग्रेस की सोच है और इसी तानाशाही प्रवृत्ति को आज भी पार्टी आगे बढ़ा रही है।

विज बोले- पुश्तों तक चलता है डीएनए

हरियाणा के मंत्री अनिल विज ने कांग्रेस पर हमला तेज करते हुए कहा कि कांग्रेस के डीएनए में तानाशाही है और यह गुण पीढ़ियों तक चलता है। उन्होंने याद दिलाया कि 1975 में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आपातकाल लगाकर साबित कर दिया था कि कांग्रेस कैसे काम करती है।

देश में आतंकवाद की जन्मदाता कांग्रेस

विज ने कहा कि देश में आतंकवाद की असली जन्मदाता कांग्रेस पार्टी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने ही धर्म के आधार पर देश का बंटवारा करवाया, जबकि महात्मा गांधी ने साफ कहा था कि ₹देश का बंटवारा मेरी लाश पर होगा। विज के अनुसार, कांग्रेस ने इस चेतावनी को नजर अंदाज कर बंटवारे की नींव रखी, जिससे करीब 10 लाख लोगों की जान गई और करोड़ों को अपना घर छोड़कर पलायन करना पड़ा। उन्होंने कहा कि इसी विभाजन के कारण पाकिस्तान की दुश्मनी की जड़ें पड़ीं, जो आज तक जारी है। विज ने कहा कि कांग्रेस ने कश्मीर में धारा 370 लगा दी। कश्मीर में धारा 370 लगने के बाद आतंकवाद उपजा और कांग्रेस ने अपने 55 साल के कार्यकाल में आतंकवाद को खत्म करने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की। जबकि हमारी भाजपा सरकार ने कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाया।

केशव प्रसाद मौर्य का सपा प्रमुख पर विवादित बयान, बोले- 'अखिलेश यादव मानसिक...'

विपक्ष की तरफ से उठाए गए सवालों पर उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने तीखी प्रतिक्रिया दी है.

प्रदेश में बाढ़ हालातों पर विपक्ष की तरफ से उठाए जा रहे सवालों पर डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने पलटवार करते हुए अखिलेश यादव को विक्षिप्त बताया है.

एजेंसी

उत्तर प्रदेश के कई जिले इन दिनों भारी बारिश की वजह से बाढ़ की चपेट में हैं, वहीं विपक्ष बाढ़ की तैयारियों को लेकर प्रदेश सरकार की तैयारियों पर सवाल उठा रहा है. विपक्ष की तरफ से उठाए गए सवालों पर उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने रविवार तीखी प्रतिक्रिया दी है. इसके साथ ही उन्होंने पूर्व सांसद प्रज्ञा ठाकुर को लेकर बड़ा बयान दिया है.

केशव प्रसाद मौर्य ने अखिलेश यादव पर पलटवार करते हुए कहा, अखिलेश यादव मानसिक विक्षिप्त हो गए हैं, प्रकृति से कौन लड़ सकता

है, लेकिन सरकार और भाजपा के कार्यकर्ता बाढ़ पीड़ितों की हर संभव मदद और सेवा में जुटे हैं. सरकार और भाजपा की सेवा से जनता संतुष्ट है. केशव प्रसाद मौर्य ने आगे कहा, अखिलेश यादव एंड कंपनी सिर्फ बयानबाजी में माहिर है. सपा की अखिलेश यादव जी की सरकार के समय बाढ़ राहत का पैसा और सामग्री भ्रष्टाचारी सपाई गुंडे अपराधी खा जाते थे, जनता ये भूली नहीं है. डिप्टी सीएम ने कहा, सपा कुछ भी कर ले, 2047 तक सपा सरकार असंभव है. जनता भाजपा के साथ थी, है और रहेगी.

'भगवा कभी नहीं हो सकता आतंकवादी'

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने पूर्व सांसद प्रज्ञा ठाकुर के बयान कहा, प्रज्ञा ठाकुर ने क्या कहा, इस पर नहीं बोलना लेकिन कांग्रेस के काले कारनामे उजागर हुए हैं. आतंकवाद का रंग नहीं होता, देश के दुश्मन होते हैं. साध्वी प्रज्ञा ठाकुर को फंसाया गया था .न्यायालय ने साबित कर दिया है कि भगवा कभी भी आतंकवादी नहीं हो सकता. ये विखंडित करने वाले लोगों की मंडली है.

मणिशंकर अय्यर के बयान पर किया पलटवार

इसके अलावा कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मणिशंकर अय्यर की ओर से पहलगाम आतंकी हमले पर की जा रही बयानबाजी पर केशव प्रसाद मौर्य ने कहा, उनको सबको पागलपन का दौरा है. हमारी सेना ने अपने लड़ाकू विमानों की ताकत दिखा दी. उन्होंने कांग्रेस को पाकिस्तान का बिछड़ा भाई-बहन बताया है.

ग्रेनाइट खदान में चट्टान गिरने से ओडिशा के 6 मजदूरों की मौत, 8 अन्य घायल

आंध्र प्रदेश के बापटला जिले में ग्रेनाइट खदान में चट्टान गिरने से छह मजदूरों की मौत हो गई. सभी ओडिशा के रहने वाले थे.

एजेंसी

अमरावतीः आंध्र प्रदेश के बापटला जिले में रविवार को एक खदान में ग्रेनाइट की बड़ी चट्टान गिरने से छह प्रवासी मजदूरों की मौत हो गई और 8 अन्य घायल हो गए. यह हादसा रविवार सुबह लगभग 10:30 बजे जिले के बल्लीकुरवा के पास सत्यकृष्ण ग्रेनाइट खदान में हुआ, जब 16 मजदूर खदान के अंदर खनन कार्य में लगे हुए थे. इसके बाद खनन विभाग के अधिकारियों के साथ पुलिस के साथ घटनास्थल पर तुरंत बचाव अभियान शुरू किया गया. अधिकारियों ने बताया कि ग्रेनाइट खदान का किनारा ढहने से छह लोगों की मौत हो गई. सभी पीड़ित ओडिशा

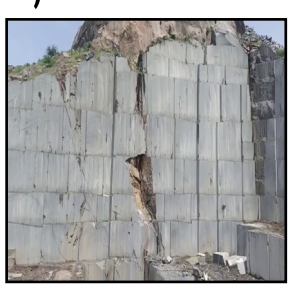

के रहने वाले हैं. घटनास्थल पर बचाव कार्य जारी है. अब तक 4 शव बरामद किए जा चुके हैं. गंभीर रूप से घायल 8 मजदूरों को बेहतर इलाज के लिए नरसारावपेट अस्पताल भेजा गया है. डॉक्टरों ने बताया कि इनमें से कई की हालत गंभीर है. पुलिस अधिकारी ने बताया कि संदेह है कि पानी के रिसाव के कारण चट्टान धंस गई. फोरेंसिक टीमें जांच कर रही हैं. उन्होंने आगे कहा कि कोई विस्फोट या भूकंपीय गतिविधि नहीं हुई. अधिकारियों का मानना है कि खदान प्रबंधन ने कोई सुरक्षा उपाय नहीं किए थे

यूपी में बारिश से 24 घंटे में 12 की मौत, गले तक पानी पिता के हाथ में नवजात

प्रयागराज के गोविंदपुर में बाढ़ में की गाड़ी फंस गई। जवानों ने ट्रैक्टर से खींचकर गाड़ी को बाहर निकाला। गोविंदपुर के कैलाशपुरी इलाके में एक युवक ने पानी की टंकी को काटकर नाव बना दिया। इसी बीच सांसद संजय सिंह ने पर वीडियो शेयर किया।

एजेंसी

उत्तर प्रदेश ,यूपी में बाढ़ से हालात अब बिगड़ने लगे हैं। प्रयागराज, काशी

मंत्री बोले- एमपी में बारिश से यूपी में बाढ़; 40 शहरों में बारिश, अस्पताल डूबा

समेत 14 जिलों में बाढ़ आई हुई है। सीएम योगी ने बाढ़ से राहत-बचाव के लिए मंत्रियों की स्पेशल टीम-11 बनाई है। योगी ने कहा- मंत्री तत्काल अपने प्रभावित जिलों में ग्राउंड जीरो पर उतरें। मंत्री रात में भी अपना जिला नहीं छोड़ेंगे। वाराणसी और प्रयागराज में गंगा का पानी एक लाख से अधिक घरों में घुस गया है। श्मशान घाट डूब गए हैं। सड़कों पर नावें चल रही हैं। काशी में हजारों लोगों ने घर छोड़ दिया है। यहां गंगा का जलस्तर खतरे के निशान को पार कर चुका है। दोपहर 12 बजे गंगा

का जलस्तर 71.66 मीटर रिकॉर्ड किया गया, जबकि यहां खतरे का निशान 71.26 मीटर है। ऐसे में गंगा खतरे से 40 सेंटीमीटर ऊपर बह रही है।इसमें एक महिला और पुरुष नवजात बच्चे को बचाने के लिए जान जोखिम डालकर जाते नजर आ रहे। दोनों खुद गले तक पानी में डूबे हैं। पुरुष नवजात बच्चे को हाथों से ऊपर उठाए हुए है। सांसद ने लिखा- ये न्यू इंडिया है। ये धार्मिक नगरी प्रयागराज है। यहां मासूम बच्चे को मां-बाप नाले से लेकर जाते हैं। पीलीभीत के सांसद और केंद्रीय मंत्री जितिन प्रसाद की गाड़ी कीचड़ में फंस गई। ट्रैक्टर से खींचकर बाहर निकाला गया। भदोही में बारिश से हाईवे डूब गया। महाराजा बलवंत अस्पताल के वार्डों में पानी भर गया। रायबरेली, लखनऊ, प्रतापगढ़ समेत 40 जिलों में सुबह से रुक-रुक बारिश जारी है। प्रतापगढ़ इतनी बारिश हुई है कि कोतवाली में पानी घुस गया है। लखीमपुर खीरी में नदी से निकलकर मगरमच्छ सड़क पर आ गया। सिंघाई थाने के पास मौजूद लोगों ने जब उन्हें देखा तो घबरा गए। इसके बाद वन विभाग को सूचना दी गई। वन विभाग के पहुंचने से पहले मगरमच्छ भाग गया। शनिवार की बात करें तो 49 जिलों में औसतन 5.2 मिमी बारिश दर्ज की गई। सबसे अधिक बारिश कन्नौज में 51.3 मिमी और कासगंज में 45.3 मिमी हुई। मौसम विभाग ने आज 71 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया है। इनमें से 7 जिलों में बहुत भारी बारिश का अलर्ट है।

संक्षेप

अहिमाने बाजार में चला व्यापारियों का सदस्यता अभियान

रवीन्द्र त्रिपाठी बोले-पदाधिकारी अपने दायित्व का ईमानदारी से करें निर्वहन

सुलतानपुर, भारतीय उद्योग व्यापार मंडल द्वारा सुल्तानपुर के सदर तहसील के अहिमाने बाजार में व्यापारी बैठक और सदस्यता अभियान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में व्यापारियों की प्रमुख समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही सदस्यता अभियान भी चलाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र कसौधन ने की। संचालन अहिमाने बाजार अध्यक्ष अमित पांडे ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश महामंत्री रवीन्द्र त्रिपाठी उपस्थित रहे। इस अवसर पर त्रिपाठी ने कहा, ₹संगठन की वास्तविक ताकत उसके सदस्य हैं। संगठन की रीढ़ कार्यकर्ता हैं। प्रत्येक पदाधिकारी की जिम्मेदारी है कि ज्यादा से ज्यादा व्यापारियों को मंडल की सदस्यता दिलाएं। इससे संगठन की मजबूती बढ़ेगी।₹ बैठक में सदर तहसील के विभिन्न बाजारों के पदाधिकारियों और व्यापारियों ने अपनी समस्याएं उठाईं। इनमें विद्युत आपूर्ति, सड़क पर जलभराव, फूड विभाग द्वारा अनावश्यक भय दिखाना शामिल था। साथ ही थानों में व्यापारियों की समस्याओं को गंभीरता से न लेना, जीएसटी एवं बिजली विभाग द्वारा परेशानी और अवैध वसूली जैसे मुद्दे भी उठाए गए।

मेडिकल कॉलेज में मैनपावर नियुक्ति में बड़ा खेल

सवा दो साल पुरानी लीड रिसोर्स कंपनी को मिला ठेका, शासन के मानकों की अनदेखी

सुलतानपुर, राजकीय मेडिकल कॉलेज में मैनपावर नियुक्ति प्रक्रिया में गंभीर अनियमितता सामने आई है। कॉलेज प्रशासन ने लीड रिसोर्स सिक्योरिटी मैनपावर सर्विसेज के माध्यम से स्टॉफ की नियुक्ति की है और वर्तमान में भी इसी प्रक्रिया को जारी रखा है। जीईएम पोर्टल पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, यह कंपनी लखनऊ की है। जांच में पता चला है कि, दो कंपनियां बनाई गई हैं - एक प्राइवेट लिमिटेड और दूसरी सर्विसेज। आश्चर्य की बात है कि दोनों का पता एक ही है, केवल शब्दों में मामूली हेरफेर किया गया है। जीएसटी साइट और इंटरव्यू के लिए जारी पत्र दोनों में पते में अंतर है।

ससुराल वालों ने महिला को पीटकर घर से निकाला

मासूम को भी अपने पास रखा, तीन महीने से मायके में रह रही; पुलिस में शिकायत

सुलतानपुर, कूरेभार थाना क्षेत्र की एक महिला ने अपने पति और ससुराल वालों पर गंभीर आरोप लगाए हैं। सोनाली यादव ने थाना प्रभारी को दी शिकायत में बताया कि उनके पति रामबीर यादव और चाचा छविलाल यादव ने कुछ दिन पहले उन्हें मारपीट कर मायके छोड़ दिया था। उन्होंने बताया कि ससुराल वाले उनके ढाई साल के बेटे को भी अपने पास रख लिए हैं। सोनाली पिछले तीन महीने से अपने मायके में रह रही हैं। इस दौरान न तो किसी ने फोन किया और न ही उनका हालचाल लिया। सोनाली ने बताया कि 31 जुलाई को दोपहर में वह अपनी ससुराल गई।

बीडीसी ने मरने से पहले लिखा सुसाइड नोट

महिला समेत 7 को मौत का जिम्मेदार बताया, वॉट्सऐप पर लिखा- मुझे राजनीति के तहत फंसाया

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

प्रयागराज, 'मुझे राजनीति के तहत फंसाया जा रहा है। इसमें एक महिला समेत 7 लोग शामिल हैं। यही लोग मेरी मौत के लिए जिम्मेदार होंगे। मेरे न रहने पर इन लोगों पर कार्रवाई की जाए।' यह सुसाइड नोट बीडीसी शिव शंकर पांडेय उर्फ दीपक पांडेय ने आत्महत्या करने से पहले वॉट्सऐप पर लिखा था। उन्होंने यह मैसेज लिखकर अपने दूसरे वॉट्सऐप नंबर पर भेजा था। चचेरे भाई ने उनका मोबाइल फोन ऑन किया तो उन्हें बीडीसी के मोबाइल पर दूसरे वॉट्सऐप नंबर पर यह मैसेज मिला। उन्होंने इस मैसेज को पुलिस को दिखाया। पुलिस ने बीडीसी के मोबाइल को जांच के लिए फोरेंसिक में भेजा है। जांच के बाद तय होगा कि मैसेज किसने और कब भेजा था। 29 जुलाई को उनके घर से सिर्फ 100 मीटर दूर रहने वाली महिला ने बीडीसी पर रेप करने के प्रयास के आरोप लगाए थे। वह यह बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर पाए। बीडीसी ने 30 जुलाई को खुद को लाइसेंसी पिस्टल से गोली मार ली। बीडीसी ग्राम प्रधान का चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे थे। जिस महिला ने आरोप लगाए, वो भी प्रधानी का चुनाव लड़ना चाहती थी। पुलिस ने सुसाइड के बाद महिला समेत 3 लोगों को अरेस्ट किया। 6 लोगों के खिलाफ एफआईआर लिखी गई। ये 30 जुलाई की है। बीडीसी के सुसाइड करने के बाद घर के अंदर महिला विलाप कर रही थी। परिवार की महिलाएं उसे संभालती हुई दिखी। ये 30 जुलाई की है। बीडीसी के सुसाइड करने के बाद घर के अंदर महिला विलाप कर रही थी। परिवार की महिलाएं उसे संभालती हुई दिखी। बीडीसी ने लिखा- मेरी मौत के बाद इन लोगों पर कार्रवाई करना बीडीसी पर 29 को महिला ने रेप करने के प्रयास के आरोप लगाकर थाने में तहरीर दी थी। इसी दिन शाम करीब 3 बजे उन्होंने अपने दूसरे वॉट्सऐप नंबर पर एक मैसेज भेजा। मैसेज में उन्होंने लिखा- महोदय जी से निवेदन है कि शिव शंकर पांडेय, जो की लोहदी ग्राम सभा का मूल निवासी है। अपने पूरे होश में आप लोगों को यह सूचित करना चाहता है, कि राजनीति के तहत हमको फंसाने की कोशिश की जा रही है। इसके जिम्मेदार अमिताभ पांडे, अजय कुमार मिश्रा, रोहित शर्मा, ओम प्रकाश पांडे, बजरंगी पटेल, नान पटेल और एक महिला है। यह हमारे आत्महत्या के लिए जिम्मेदार होंगे। हमारे ना रहने पर इन पर कार्रवाई की जाए। 30 जुलाई को परिजनों ने शव का अंतिम संस्कार कर दिया। इसके बाद परिजन घर पहुंचे।

मंत्री नंदी ने किया बाढ़ का निरीक्षण

बाढ़ग्रस्त इलाकों और राहत शिविरों में पहुंचे मंत्री नंदी, बांटी राहत सामग्री

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

प्रयागराज, जिले में गंगा और यमुना नदियों का जलस्तर लगातार बढ़ता जा रहा है, जिससे शहर और ग्रामीण दोनों इलाकों में भारी बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गई है। दोनों नदियाँ खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं, जिससे एक दर्जन से अधिक मोहल्ले और कई गांव जलमग्न हो गए हैं। इस आपदा की गंभीरता को देखते हुए राज्य सरकार सक्रिय हो गई है और प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्यों को गति दी जा रही है। कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल नंदी ने बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा किया और राहत कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने बाढ़ राहत शिविरों का जायजा लिया और शिविर में मौजूद बाढ़ पीड़ितों से बातचीत कर उनकी समस्याएं सुनी। मंत्री ने मौके पर ही अधिकारियों को जरूरी दिशा-निर्देश दिए और यह सुनिश्चित करने को कहा कि किसी भी प्रभावित व्यक्ति को भोजन, पानी, दवा और अन्य आवश्यक सुविधाओं की कमी न हो। बाढ़ प्रभावित इलाकों में मंत्री नंदी ने स्वयं राहत सामग्री बांटी, जिसमें सूखा राशन, पीने का पानी, दवाइयाँ, चादरें और जरूरत की अन्य चीजें शामिल थीं। उन्होंने मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि राज्य सरकार पूरी तरह से सजग और सतर्क है। ह्लमुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी स्वयं हालात पर नजर रखे हुए हैं और हर संभव सहायता उपलब्ध कराई जा रही है,ह्व उन्होंने कहा। प्रयागराज में कई निचले इलाकों जैसे दारागंज, सलोरी, बघाड़ा, नैनी और झूंसी बाढ़ की चपेट में आ गए हैं।

इन मोहल्लों में रहने वाले सैकड़ों परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर शिफ्ट किया गया है। स्थानीय प्रशासन द्वारा दर्जनों बाढ़ राहत शिविरों की स्थापना की गई है, जहां लोगों को भोजन, पानी और चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। ग्रामीण इलाकों में हालात और भी गंभीर हैं।

मूसलाधार बारिश से गरीबों के घर गिरे

जलभराव की स्थिति, मवेशियों के लिए हरे चारे का संकट

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अमेठी, पिछले तीन दिनों से लगातार हो रही बारिश ने जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है। जगह-जगह जलभराव की स्थिति बनी हुई है और गरीबों के कच्चे मकान गिर रहे हैं। हुई तेज बारिश के कारण रणबीर नगर महुआ ताली, मुराई का पुरवा, धमरांवा, छावनी, रामनगर बाजार और कटरा आदि गांवों में नालियां ध्वस्त हो गई हैं। इससे गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है। बारिश के चलते रणवीर नगर निवासी रामप्यारी पत्नी राम अवध का कच्चा मकान गिर गया है। छावनी में किसमतुलनिशा का मकान भी गिर गया है। रामनगर गांव में भी दो अन्य मकान गिरे हैं। पीड़ित परिवारों को बारिश के मौसम में रहने की चिंता सता रही है। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि बृजलाल वर्मा ने सभी पीड़ितों के घर पहुंचकर हालचाल लिया और हर संभव मदद करने का भरोसा दिया। उन्होंने मकान गिरने की सूचना क्षेत्रीय लेखपाल और राजस्व निरीक्षक को दी है। अत्यधिक बारिश के कारण पशुपालकों के सामने भी संकट खड़ा हो गया है। पशुपालक रामकुमार यादव, राम अवध मौर्य और अरुण कुमार मौर्य ने बताया कि सभी खेतों में जलभराव की स्थिति है। मवेशियों के लिए हरे चारे की व्यवस्था करना मुश्किल हो रहा है। कहीं भी हरा चारा नहीं मिल पा रहा है, जिससे पशुपालकों की परेशानी बढ़ गई है।

सड़क हादसे में युवक की मौत

भंडारे का प्रसाद लेकर लौट रहा था घर, परिजनों ने 38 घंटे बाद किया अंतिम संस्कार

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

सुलतानपुर, जयसिंहपुर कोतवाली क्षेत्र के बझना गांव में एक युवक की सड़क हादसे में मौत के बाद परिजनों ने 38 घंटे तक अंतिम संस्कार किया। 22 वर्षीय चंदन शर्मा भंडारे का प्रसाद लेकर घर लौट रहा था। रास्ते में कूरेभार थानाक्षेत्र के बरौला निवासी अमित यादव जेसीबी से एक फंसी हुई ट्रक को निकलवा रहे थे। मार्ग अवरुद्ध होने पर चंदन बगल से निकलने लगा तो अमित ने उसे गालियां दीं। विरोध करने पर अमित ने उसे जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद चंदन घर चला आया और फिर अपने पिता को डेयरी से बुलाने निकला। रास्ते में वह भंडारे से लौट रहे लोगों से बात कर रहा था। इसी दौरान अमित यादव, सचिन और पिंटू (राम चंदर यादव के पुत्र) कार से आए और सड़क पर खड़े चंदन और अन्य लोगों को रौंद दिया। इस हादसे में चंदन की मौत हो गई और कई लोग घायल हुए। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। जब शव घर पहुंचा तो आक्रोशित परिजनों और ग्रामीणों ने दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग को लेकर प्रदर्शन शुरू कर दिया। कोतवाली प्रभारी सत्येंद्र कुमार सिंह और सीओ आशुतोष कुमार ग्रामीणों को समझाने में जुटे रहे। मृतक के पिता रामदौर शर्मा ने बताया कि चंदन उनका एकमात्र पुत्र और परिवार का सहारा था। उन्होंने और उनकी पत्नी विकलांग हैं और परिवार के पास खेती-बाड़ी भी नहीं है। परिजनों ने आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के साथ-साथ कृषि पट्टा, 50 लाख रुपये की आर्थिक सहायता, अविवाहित पुत्री की निशुल्क शिक्षा और सरकारी नौकरी की मांग की है। जयसिंहपुर कोतवाली में आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली गई है।

जायस में नर्सिंग होम का उद्घाटन

स्वास्थ्य शिक्षा राज्य मंत्री ने किया मीर हॉस्पिटल का शुभारंभ

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अमेठी जिला, जायस में रायबरेली-सुल्तानपुर रोड पर कोतवाली के पास मीर हॉस्पिटल नर्सिंग होम का उद्घाटन किया गया। स्वास्थ्य शिक्षा राज्य मंत्री राजा मनकेश्वर शरण सिंह ने फीता काटकर अस्पताल का विधिवत शुभारंभ किया। इस अवसर पर सीएमओ अंशुमान सिंह समेत क्षेत्र के कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम में ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि मुन्ना सिंह, पूर्व ब्लॉक प्रमुख रमेश सिंह, अनिल साहू, महेश मौर्या, इसरार खान, अबरार खान, डॉ. अशरफ और रेहान मेडिकल स्टोर भी मौजूद थे। अस्पताल के निदेशक डॉ. इंजमामुल हक ने बताया कि इस नर्सिंग होम में पैथोलॉजी सेवाओं से लेकर विभिन्न प्रकार की बीमारियों का इलाज किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यहां अनुभवी चिकित्सक उपलब्ध होंगे जो मरीजों को बेहतर इलाज प्रदान करेंगे। डॉ. हक ने बताया कि इस अस्पताल के खुलने से अब क्षेत्र के लोगों को इलाज के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। स्थानीय स्तर पर ही उन्हें गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकेंगी।

5 लोगों पर हमला करने वाले तेंदुए की मौत

अमेठी में तबेले में मिला शव ; डीएम बोले- शायद भैंसों के हमले में मरा हो

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अमेठी जिला, 5 लोगों पर हमला करने वाले तेंदुए की मौत हो गई। भैंसों के तबेले में मरा पड़ा था। बताया जा रहा है कि भैंस का शिकार करने के लिए तेंदुआ तबेले में गया था, भैंसों के हमले में उसकी मौत हो गई। रातभर वन विभाग, पुलिस और पीएसी के जवान तेंदुए की तलाश कर रहे थे, लेकिन कहीं पता नहीं चला। रात तीन बजे ग्रामीणों की सूचना पर वन विभाग की टीम तबेले में पहुंची और तेंदुए के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवाया। मामला मुसाफिरखाना कोतवाली क्षेत्र के ग्राम सभा नेवादा का है। तेंदुआ कादू नाला वन क्षेत्र से शनिवार सुबह आया था। नेवादा के भैंदपुर और बिरईपुर गांव में 5 लोगों पर हमला कर दिया। उसे रेस्क्यू करने के लिए लखनऊ और बहराइच से भी टीमें पहुंची थीं। मुसाफिरखाना कोतवाली क्षेत्र के भैदपुर गांव के विजय (32) और बलदेव (35) शनिवार दोपहर 12 बजे के करीब लड़की काटने के लिए जंगल की ओर जा रहे थे। तभी झाड़ियों में छिपे तेंदुए ने उन पर हमला कर दिया था। जान बचाने के लिए दोनों घर की तरफ भागे। तेंदुआ भी उनके पीछे-पीछे गांव में आ गया। गांव में तेंदुए के घुसते ही भगदड़ मच गई। विजय और बलदेव की जान बचाने के लिए ग्रामीणों ने एकजुट होकर तेंदुए को पकड़ना चाहा। इसी कोशिश में गांव के ही छोटेलाल (55) व दो अन्य युवक भी घायल हो गए। इसके बाद तेंदुआ गांव के एक घर में घुस गया।

घर के लोग डरकर बाहर आ गए। दो पुलिस कर्मी पहुंचे, पर बेबस दिखे लोगों ने तेंदुए को खदेड़ना चाहा तो वह एक अन्य घर में घुस गया। ग्रामीणों ने इसकी सूचना वन विभाग और पुलिस को दी।

हत्या कर खेत में फेंका शव, आरोपी फरार

गले में रस्सी का फंदा और चेहरे पर चोट के निशान, बस का टिकट मिला

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अलीगढ़ , थाना गभाना इलाके में एक व्यक्ति हत्या कर शव फेक कर आरोपी फरार हो गए। शव खेत में पड़ा मिला। घटना की जानकारी उस वक्त हुई जब किसान फसल में पानी लगाने पहुंचा। घटना से इलाके में सनसनी फैल गई। ग्रामीण भारी संख्या में इकट?ठा हो गए। उसके गले मे रस्सी बंधी मिली है। चेहरे पर चोट के निशान हैं। सूचना पर इलाका पुलिस और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंच गई। पुलिस ने शनिवार की देर शाम शव कब्जे में लेकर मोर्चरी में रखवा दिया। पुलिस मृतक की शिनाख्त में जुटी है। गले में रस्सी का फंदा, चेहरे पर चोट के निशान गभाना थाना इलाके के गांव लालपुर नगला बंजारा के रहने वाले अरविंद शर्मा के किसान हैं। अपनी धान की फसल में पानी लगाने गए थे। इसी दौरान खेत मे कुछ कपड़े पड़े दिखाई दिये। इसके पास में गए। जहां एक व्यक्ति का शव पड़ा देख उनके होश उड़ गए। खेत में शव पड़ा होने की जानकारी मिलते ही भारी संख्या में ग्रामीणों एकत्र हो गए। ग्रामीण ने इसकी सूचना पुलिस को दी। थाना पुलिस और फोरेंसिक टीम मौके पर आ गई। घटनास्थल से फोरेंसिक टीम ने साक्ष्य एकत्र किए। पुलिस के मुताबिक, मृतक व्यक्ति की उम्र करीब 40 साल होगी। उसके गले में रस्सी से फंदा लगा हुआ मिला है और उसके चेहरे पर चोट के निशान हैं। शव के पास मिला कपड़ा, बस का टिकट शव के पास में कुछ कपड़े भी पड़े मिले हैं। तलाशी में जेब से गुरुवार की शाम का एक टिकट मिला है। जोकि एटा डिपो की बस का है। टिकिट पर यात्रा दादरी से गभाना तक की लिखी है।

दाएं हाथ पर अशोक कुमार गुदा हुआ है। पुलिस के अनुसार, आरोपियों ने व्यक्ति की हत्या करने के बाद शव को खेत में फेंका है। आसपास के थानों में उसकी फोटो भेजकर पुलिस शिनाख्त कराने में जुटी है। शव को अगले 72 घंटे के लिए पोस्टमार्टम हाउस की मोर्चरी में रखवा दिया है। साथ ही क्षेत्र में लगे सीसीटीवी फुटेज चेक कर हत्यारों की तलाश शुरू कर दी गई है।

बोलेरो और बाइक की टक्कर

4 फीट उछलकर गिरे; दोनों युवकों की जान बची तो ड्राइवर को दौड़ाया

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मथुरा, रॉन्ग साइड से आ रही बोलेरो कार और बाइक की टक्कर हो गई। हादसे के बाद बाइक सवार 2 युवक करीब 4 फीट तक उछलकर सड़क पर जा गिरे। गनीमत रही दोनों को चोट नहीं आई। हालांकि इसके बाद बोलरो चालक गाड़ी लेकर फरार हो गया। हादसा छाता थाना क्षेत्र के शेरगढ़ रोड की है। हादसा 25 जुलाई का बताया जा रहा है। अब हादसे का 35 सेकेंड का वीडियो सामने आया है। इसमें दिख रहा है। एक बोलेरो रॉन्ग साइड से तेजी से आ रही है। तभी दूसरी दिशा आ रही बाइक में टक्कर मार देती है। टक्कर लगते ही दोनों बाइक सवार करीब 4 फीट उछलकर नीचे गिर जाते हैं। जबकि उनकी बाइक बोलेरो में ही फंस जाती है। हादसे के बाद बोलेरो का ड्राइवर गाड़ी को बैक करता है और फिर वहां से भागने लगता है। तभी बाइक से गिरा एक युवक खड़ा होकर उसे रोकने की कोशिश करता है लेकिन वह भाग जाता है। थोड़ी ही देर में वहां लोगों की भीड़ लग गई। बताया जा रहा है कि गाड़ी मेवात क्षेत्र की थी। हादसे में गनीमत रही कि बाइक सवारों को कोई गंभीर चोट नहीं आई।

रेलवे स्टेशन और ट्रेनों में चोरी करने वाले 2 गिरफ्तार

भीड़भाड़ वाली ट्रेनों में यात्रियों का सामान चुराते थे, 2.66 लाख का माल बरामद

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

सुलतानपुर, जीआरपी सुलतानपुर ने रेलवे स्टेशन और ट्रेनों में चोरी करने वाले दो शातिर चोरों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 3 मोबाइल फोन, 1 ट्रॉली बैग, 1 लैपटॉप, 1 टैबलेट और 21,061 रुपए नगद समेत कुल 2,66,061 रुपए का सामान बरामद किया है। अपर पुलिस महानिदेशक रेलवे उत्तर प्रदेश के आदेश पर चलाए जा रहे अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई।

राशन वितरण में गड़बड़ी

64 क्विंटल राशन गायब, कोटेदार पर मुकदमा दर्ज

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अमेठी तहसील, जिले के भादर ब्लॉक के नेवढ़िया गांव में राशन वितरण में अनियमितता पाई गई है। गोदाम से राशन गायब किए जाने की पुष्टि के बाद कोटेदार लक्ष्मी सिंह के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया गया है। जिला पूर्ति अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी ने बताया कि नेवढ़िया गांव की उचित दर दुकान के बारे में दो शिकायतें आई थीं। लाभार्थियों ने आरोप लगाया था कि उन्हें एक माह का राशन नहीं दिया गया। इस पर पूर्ति लिपिक अनिल कुमार व पूर्ति निरीक्षक सुषमा सिंह को जांच के लिए भेजा गया। जांच में दुकान खुली मिली और कोटेदार लक्ष्मी सिंह मौके पर मौजूद थीं। जांच के दौरान ई-पॉश मशीन बंद मिली। रिकॉर्ड के मिलान में गड़बड़ी सामने आई। गोदाम में चावल 53.147 क्विंटल और गेहूं 11.467 क्विंटल कम पाया गया। कुल 64.614 क्विंटल राशन के अभाव को गंभीर अनियमितता मानते हुए तत्काल रिपोर्ट तैयार की गई। कई लाभार्थियों ने अपने बयान में स्पष्ट किया कि उन्हें नियमित रूप से राशन नहीं मिलता है।

स्वामी, प्रकाशक , मुद्रक अरविंद कुमार शर्मा द्वारा एफ एल टी ,एलजी 75 आर एम 4/4 इंदिरा नगर, सुंदर बाग,कुर्ला (प)मुंबई 400070 महाराष्ट्र से प्रकाशित एवं AIS PRINTING SOLUTION प्लांट नं० -A-544 TTC इंडस्ट्रियल एरिया एम आई डीसी माहपे नवी मुंबई ,ठाणे 400709 से मुद्रित। संपादक - अरविंद कुमार शर्मा

EMail-bsmumbai2017@gmail.com किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय ही होगा। 8097049935,9935750291RNI No-MAHHIN2017/74173

संपर्क का कार्यालय- 66/68 भाखरिया बिल्डिंग मीना मेहता मार्ग मोदी स्ट्रीट मुम्बई 400001

संरक्षक- डॉ राम किशोर शर्मा पूर्व विभागाध्यक्ष (हिन्दी) इलाहाबाद विश्व विद्यालय, विशेष संवाददाता- आशीष कुमार शर्मा सह, सम्पादक- माता प्रसाद शर्मा, फिल्म- संपादक-जगन्नाथ तिवारी